कीमतः 3.00 रुपये मात्र

अंक 8,जून–2002

विश्व

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह

समाज

0नैंना का धारावाहिक उपन्यास "दिल का पैगाम"0 बहुत निर्मि शायर थे अकबर इलाहाबादी

अतिशयकारी तीर्थ क्षेत्र प्रभाषगिरी

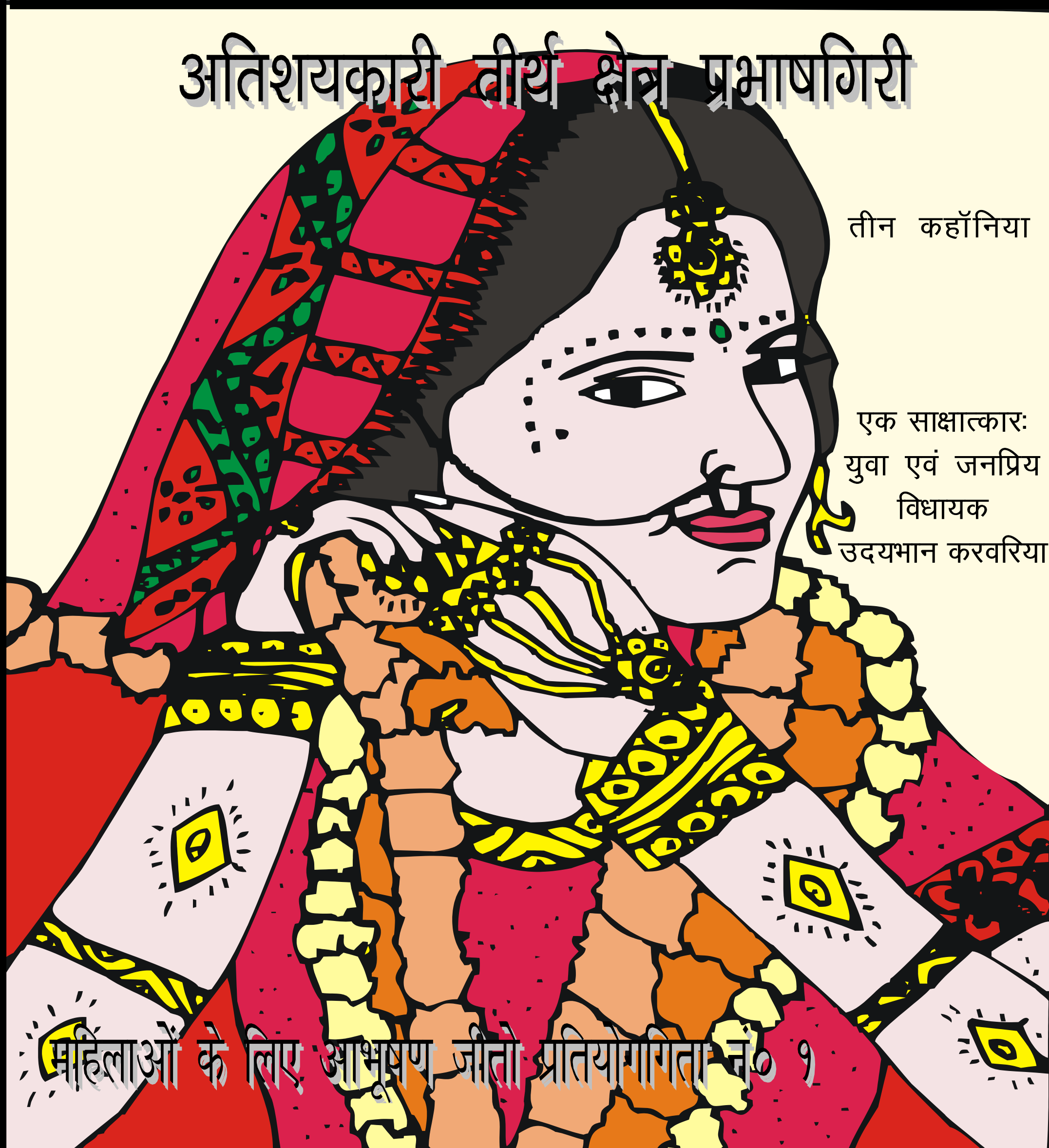

तीन कहॉनिया

एक साक्षात्कारः
युवा एवं जनप्रिय
विधायक
उदयभान करवरिया

महिलाओं के लिए आभूषण जीतो प्रतियोगिता नं० १

क्या आप बेरोजगार है?

क्या आप पैसा कमाना चाहते है?

क्या आप चाहते है कि आपका इंडिया के टॉप टेन सिटी में अपना फ्लैट हो?

आपकी अपनी दो–दो कारें हो?

क्या विदेश यात्रा पर बिना पैसा खर्च किए जाना चाहते है?

क्या आप चाहते है कि आपके पास अच्छे मॉडल की मोटर साईकिल हो?

तो आइए आपको ले चलते है ख्वाबों की दुनिया में, ख्वाबों को हकीकत में बदलने के लिए आपके साथ आया है

विस्न नेट सिस्टम का अनोखा प्लान जो आपको उपरोक्त सारी चींजे उपलब्ध करायेगा

बस आपका थोड़ा–सा धैर्य, थोड़ी सी मेहनत,

कर देगी आपके प्रत्येक ख्वाब को हकीकत।

विस्तृत जानकारी के लिए हमें लिखें या मिलें :–

नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

रोग़न
चन्द्रमा

सरदर्द, समलबाई, चक्कर, दिमाग़ी कमज़ोरी और आँखों की रोशनी के लिए लाभदायक टानिक।

नोट : सर माथे और कनपटी पर मालिश करें।

नि0:नन्हे पहलवान एण्ड संस जामा मसजिद, चौक, इलाहाबाद

☎:461402

फैशन लेडीज टेलर्स

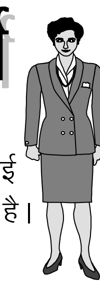

735/1, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद

हमारे यहाँ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दे।

एक बार आयेगे विज्ञापन पढ़कर,

बार–बार आयेगे काम देखकर। प्रो0 राकेश गुप्ता

चिन्तित क्यों!

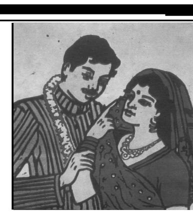

मर्दाना कमज़ोरी एवं गुप्त रोगों का ईलाज

अब बिल्कुल आसान

(ईलाज बिजली एवं दवाईंयों द्वारा)

डा0 दीवान
हरबंश सिंह क्लीनिक

3, शिवचरन लाल रोड (विश्वम्भर सिनेमा के सामने)

इलाहाबाद

दूरभाष : 401076

☎:461402

UNITEC

Computer Education

Training - CIC, BCA, MCA, DCA, E.Com, Internet etc.

Job Work :Typing, Composing, Designing and lazer Printing & Cyber-Cafe

Add : Rajroopur, (Near Police Booth) Kalindipuram, Allahabad, e-mail: sppal2001@yahoo.co.in

वर्ष : 1, अंक 8, जून 2002

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह समाज

संरक्षक : श्री बुद्धिसेन शर्मा ☎:657075

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक :
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादक : डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सलाहकार संपादक :नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्य संपादक : डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

विज्ञापन व्यवस्थापक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया द्विवेदी

सहायक संपादक :
0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

ब्युरो :

ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)
सोशन एलिजाबेथ सिंह,हरि प्रताप सिंह,इला0
जागृति नगरिया (सामा0 व्यूरो, इला0)
मो0 ताजीम (कौशाम्बी)
श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)
गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)
मिस संहमित्रा भोई (उडी़सा)
इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)
आर0जे0केशरवानी (मुंबई)

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :
,नितीन काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगिया रोड, नैनी, इला0–8

सम्पादकीय कार्यालय :
एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद
फोन ☎ 432953

कार्यालय :एफ.सी.एल.सी.नितीन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी इलाहाबाद,

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस**, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक साथियों

नमस्कार।

आपके सुझाव पत्र हमें निरन्तर प्राप्त हो रहें हैं, निश्चय ही आपको समझने आपके अन्तर में झांकने का सुअवसर इसके द्वारा हमको मिला, आशा है आपकी मनचाही सामग्री आने वाले अगले अंक में आपको मिलेगी। अतः उस पाथेय का यथोचित आस्वाद हमारे ''विश्व स्नेह समाज '' के पाठक गण अवश्य करेंगे। यह हमारा समुचित प्रयास रहेगा।

आज के इस भयंकर द्वन्दात्मक राजनीति परिदृश्य में हर वर्ग हतप्रभ है, अवाक है, टूटते शहर, हिन्दू मुश्लिम दंगे, मजहबी तांडव के कहर में बौराये नागरिकों की दुदर्शा, मौत के खूनी नर्तन से भयाकान्त जन–जीवन, हृदय विदारक चीखें, धुयें से लाल हुई अबोध सूनी–सूनी आँखें, आज के किशोर एवं किशोरियों को सबसे अधिक मर्माहत कर गया। लोगों के हृदयों में भय एवं आतंक ने बसेरा बना लिया है। एक ओर अनजाने आतंक, दूसरी ओर शिक्षा का बदला तेवर, परिक्षाओं के आउट होते पेपर एवं बदलते प्रश्न–पत्र बिचारे परिक्षार्थियों को भयाक्रांत करके रख दिया है, क्या ऐसे माहौल में किशोर–वय जबकि शांत स्थिर होकर प्रश्नों के हल कर रहे होते हैं तो दूसरी ओर अखंड नकल चल रही हो, कहीं उड़ाका दल के प्रक्षेपण से भागे भयभीत छात्रों का पलायन कौन सी दिशा दे रहा है। हमारे नौनिहालों को, भय एवं सशंय के जाल में तो अच्छे–अच्छों की बुद्धि गोल हो जाती है फिर तो ये भोले छोटे वृक्ष जिनको फलना–फूलना है, आगे बढ़ना है, इन्हें भय तो अभी से कुण्ठित किये जा रहा है।

दोस्तो, जब व्यक्ति संशय से भरा होगा तो वह कोई भी कार्य कुशलता से नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति के दो स्वरूप होते हैं। विशाल स्वरूप भय के आवरण में छिपा होता है। क्योंकि विपरीत परिस्थिति उसे पंगु बनाकर रखती है। उसे सदैव छोटे पन का अहसास दिलाती है, किन्तु जब यह भय एवं संशय का प्रेत उड़ जाता है तो व्यक्ति के अंदर उसकी विराट शक्ति प्रगट होती जिसे संसार जानने लगता है, गाँधी, शेक्सपियर, आर्मस्ट्रांग, नेपोलियन बोनापार्ट, डेकार्ट ऐसे ही डरपोंक भयभीत एवं चौर वृत्ति से युक्त किशोर थे, किन्तु जब इन्होंने अपनी दूसरी शक्ति पहचानी तो ये विश्व के अगुआ बन गये। डेवी कोकेट ने कहा था– निश्चय रखिये आप जिस पथ पर हैं वह नितान्त उचित है। बस आगे बढ़ते रहिये, भय एवं संशय में समय मत गंवाइये। "संशयात्मा विनश्यति" जो भयाक्रांत है संशय करता है, वह नष्ट होता है। हमारे प्रगति मार्ग को अवरुद्ध कर देता है। शेक्सपीयर ने कहा था–"संशय हमारे द्रोही हैं।" जिन श्रेष्ठ कार्यों को हम करना चाहते हैं ये हमारे हाँथों से छीन लेते हैं। क्योंकि हमारे मन में भय उत्पन्न करके ये उन कार्यों को आरंभ ही नहीं करने देते।

अति आतंक से निपटने के लिए उसे निर्मूल करने के लिए "पोटो अध्यादेश" लागू हुआ है। अच्छी बात है, किन्तु विरोधी इसका विरोध कर रहे है। लोकतंत्र है, किन्तु सभी दम साधे समाचार पढ़ते हैं, किन्तु कोई प्रतिक्रिया नहीं। क्या होगा ऐसी मानसिकता से भरे विश्व का–किंतु जो चुप है, मौन है, उनके अपराध भी इतिहास अवश्य लिखेगा।

"समर शेष है समरागंण में, शान्त नहीं है व्याध"
जो तटस्थ हैं, इतिहास लिखेगा उनके भी अपराध।

अतः साथियों गलत का विरोध करो। सच्चाई का सहयोग दो तभी शान्ति और स्नेह भरा पूरा संसार होगा।

डा0 कुसुम लता मिश्रा "सुधा रत्न"

बेबाक

यदि भारतीय फिल्में अपने स्तर में सुधार करें और निगमित संस्कृति को अपना लें तो वह अंतरराष्ट्रीय स्तर प्रतिस्पर्धा कर सकती है।

अमिताभ बच्चन
सुपरस्टार

कालूचक्क जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए केन्द्र सरकार को कड़े कदम उठाने चाहिए। कांग्रेस इस संकट में बाजपेयी सरकार के साथ है।

सोनिया गांधी
कांग्रेस अध्यक्षा

मैंने कभी अटल बिहारी बाजपेयी को अपना गुरु नहीं माना। उन्हें मैं सिर्फ गुरु कहता हूँ। कहने व मानने में बहुत फर्क है।

चन्द्रशेखर
पूर्व प्रधानमंत्री

मनोहर जोशी एक बुद्धिमान व्यक्ति है, जो किसी भी परिस्थिति को बखूबी संभाल सकते हैं। इसलिए उन पर रिमोट कंट्रोल इस्तेमाल करने का सवाल हीं नही उठता है।

ृबाल ठाकरे
शिव सेना सुप्रीमों

देश के लिए बेमिसाल साहस की कहानी गढ़ने का क्रिकेट का अपना अलग अंदाज है और कुंबले इस मामले में चोटी पर पहुंच गये है।

सुनील गावस्कर
पूर्व कप्तान

मैंने अपने जीवन मे खेल के मैदान पर साहस की जितनी मिसालें देखी है यह उनमें सर्वश्रेष्ठ है।

जान राईट
कोच, भारतीय क्रिकेट टीम

बसपा का हर विधायक खुद कों मंत्री समझे।

मायावती
मुख्यमंत्री उ0प्र0

भाईचारें और आपसी सद्भावना की बात से वे दल कैसे समझेगे, जिनके पूर्वजों ने कभी आजादी की लड़ाई में भाग नहीं लिया, हमेशा नफरत के बीज बोए और महात्मा गॉधी का विरोध किया है। ऐसे फिरकापरस्ती के हाथों में सत्ता है, जिन्होनें समाज को बांटकर सत्ता हथियाने की साजिश रची है।

सोनिया गांधी
नेता विपक्ष

मेरे पिछले शासन काल में भाजपा का सांम्प्रदायिक एजेंडा लागू नहीं हो पाया था और इस बार भी ऐसा ही होगा। इस सबंध में जो भी कुप्रचार हो रहा है, वह मुलायम सिंह यादव की चाल है।

मायावती
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

बसपा भाजपा गंठबन्धन में अंततः बसपा को ही नुकसान होगा।

वी0पी0सिंह
पूर्व प्रधानमंत्री

बहुसंख्यकों की उपेक्षा से नहीं बचेगी कुर्सीः

महंत रामचन्द्र परमहंस
अध्यक्ष श्री रामजन्म भूमि न्यास

अब कार्रवाई का वक्त आ गया है।

जनरल एस पद्मनाभन
थलसेनाध्यक्ष

सरकार ने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई की तैयारी कर ली है। इसकी घोषणा समय आने पर कर दी जायेगी।

लालकृष्ण आडवाणी
केन्द्रीय गृहमंत्री

कार्रवाई की उम्मीद कर रहा हूँ, जैसी अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बूश ने तालिबान के खिलाफ की थी।

फारुख अब्दुल्ला
मुख्यमंत्री जम्मू काश्मीर

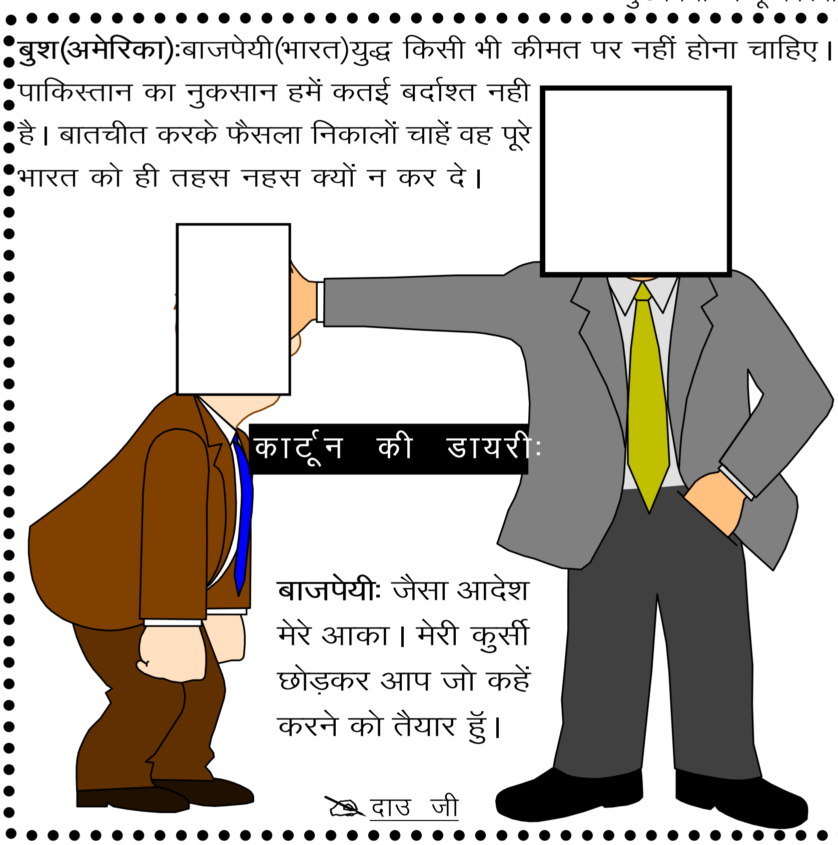

☞जी0के0 द्विवेदी

अध्यापिका से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक तीसरीं बार पहुंची सुश्री मायावती का सफरनामा

मायावती ने लगायी लम्बी छलांग

दिल्ली के लेडी हार्डिग अस्पताल (श्रीमती सुचेता कृपलानी अस्पताल) में 15 जनवरी 1956 को जन्मी बहन सुश्री मायावती के पिता श्री प्रभुदयाल मूलतः उत्तर प्रदेश कें गाजियाबाद के निकट बुलंन्दशहर मार्ग के जी टी रोड पर स्थित बादलपुर गांव के रहने वाले थे। लेकिन दिल्ली में नौकरी करते थे। पहले बादलपुर गांव बुलंदशहर जिले में था लेकिन अब गाजियाबाद जिले में है। श्री प्रभुदयाल डाक एवं तार विभाग दिल्ली में सुपरवाइजर थे। मायावती की अधिकांश शिक्षा दिल्ली में हुई। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कालेज से बी. ए. तथा एल. एल.बी. की परीक्षाएं उत्तीर्णं की। दिल्ली विश्वविद्यालय से उन्होंने बीएड भी किया। इन्होंने 1977 से 1984 तक दिल्ली प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों में अध्यापन कार्य भी किया। छात्र जीवन में स्कूल–कालेज की विभिन्न वाद–विवाद प्रतियोगिताओं तथा छात्र आंदोलनों में भी बढ़–चढकर हिस्सा लेने वाली मायावती एक नागरिक की हैसियत से अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति भी सदैव जागरूक रहीं। समाज के शोषित एवं पीड़ित वर्ग के प्रति गहन संवेदना के कारण वह 1984 में अध्यापन कार्य छोंड़कर सक्रिय राजनीति में कूद पड़ीं।

इससे पूर्व पार्टी अध्यक्ष कांशीराम के संपर्क में आने पर वह बामसेफ तथा 1981 में स्थापित डी.एस.फोर., दलित शोषित समाज संघर्ष समिति जैसे गैर राजनीतिक संगठनों में भी सक्रिय रहीं। 14 अप्रैल 1984 को बसपा की स्थापना के साथ ही पार्टी उम्मीदवार के रूप में उन्होने 1984 में कैराना–मुजफरनगर सीट से लोकसभा का चुनाव,1985 में बिजनौर से लोकसभा का उपचुनाव तथा 1987 ई0 में हरिद्वार में लोकसभा का उपचुनाव लड़ा। हरिद्वार के उपचुनाव में लगभग 1.38 लाख मत पाकर वह दूसरे नम्बर पर रहीं, जबकि 1989 के आपमचुनाव बिजनौर से पहली बार चुनाव जीतकर लोकसभा के रूप में संसद में पहुंची तथा 1994 में उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सदस्य चुनीं गयी।

अक्टूबर 1996 में हुई विधानसभा चुनाव में मायावती विल्सी, बदायूं हरौरा–सहारनपुर दोनो विधानसभा क्षेत्रों से निर्वाचित हुई। बाद में हुन्होंने विल्सी सीट छोंड़ दी। मायावती पहली बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री तीन जून 1995 को बनी थी। तथा इस पद पर 17 अक्टूबर 1997 में उन्होंने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद संभाला और सितम्बर 1997 तक 6 माह के लिए इस पद पर रहीं। मायावती 1998 के लोकसभा चुनाव में अकबरपुर सुरक्षित सीट से संसद चुनी गई। 1999 के लोकसभाचुनाव में दोबारा अकबरपुर संसदीय सीट से निर्वाचित हुई। वर्ष2002 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में हरौरा–सहारनपुर तथा जहांगीरगंज–अंबेडकर नगर दोनों सीटों से विधानसभा के लिए चुनी गई। विधानसभा के लिए निर्वाचित होने के कारण उन्होंने लोकसभा की सीट से त्यागपत्र दे दिया।

उत्तर प्रदेश के इतिहास में तीसरी बार तथा राज्य की 33वीं मुख्यमत्री बनीं बहुजन समाज पार्टी की उपाध्यक्ष मायावती ने सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने से पहले दिल्ली में अध्यापन कार्य किया था। उन्होंने वकालत की डिग्री भी हासिल की है।

मुख्यमंत्री के रूप में उन्होने समाज के दलितों के उत्थान के लिए कई कदम

चित्रांश स्टूडियों

☎:616521

115ए / 1ए, भावापुर, बेनीगंज, इलाहाबाद

हमारें यहॉ शादी के अवसर पर विडियोंग्राफी, फोटोग्राफी, लंहगा, गहना, मेकअप, मेंहदी, कार, स्टेज सजाने, मण्डप सजाने की सुविधा है।

प्रो0 सुधीर कुमार श्रीवास्तव

उठाये। उन्होंने संविधान निर्माता डा0 भीमराव अंबेडकर की स्मृति संजोए रखने के लिए लखनऊ में अंबेडकर उद्यान की स्थापना की तथा सेवा परिवर्तन चौक का निर्माण करवाया। दलितों के सर्वांगीण विकास के लिए आंबेडकर ग्राम विकास योजना की भी उन्होंने ही शुरूआत की थी।

उत्तर प्रदेश के इतिहास में वह पहली ऐसी मुख्यमंत्री रही है जिसकें नाम से मात्र से अधिकारियों के पसीने छूटने लगते है। वह जब भी राज्य के किसी क्षेत्र में दौरे पर गई, उस समय अधिकारियों के बीच में जो हड़कम्प मचा शायद वैसा नजारा देखने को कभी नहीं मिला। पिछले कार्यकाल में वह अम्बेडर ग्राम व दलितों के उत्थान के लिए बनाये गये दलित एक्ट के कारण अच्छी खासी बदनाम भी रही। वह पिछले कार्यकाल तक मनुवादी विचारधारा व मनुवादियों की प्रबल विरोधी रही। लेकिन विगत चुनाव में उन्होंने अपनी विचारधारा में परिवर्तन करते हुए सवर्णो को भी टिकट दिया और यह प्रयोग उनका एक नया गुल खिलाया जिसकी किसी को उम्मीद मात्र भी न थी। अब देखना यह है कि उनका वर्तमान कार्यकाल क्या गूल खिलाता है। क्या वह सभी जातियों के बीच लोकप्रिय होती है? क्या भाजपा के गठबंन्धन के कारण उनसे मुस्लिम वर्ग का समर्थन जुटा रह पाता है। यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। ❍

,dutjHkkjroikddhlSU; {kerkij

भारत की सैन्य क्षमता

सैनिक 12,63,000		रिजर्व 5,35,000
टैंक		3,414
तोपखाना		4,175
वायुसेना		
	1.लड़ाकू विमान	738
	2. युद्धक हेलीकाप्टर	22
नौसेना		
	1.विमानवाहक पोत	1
	2.पनडुब्बियां	16
परमाणु हथियार		60–90

नोटः एटमी हथियार छोड़ने के लिए भारत मिराज–2000, पृथ्वी और अग्नि–2 का इस्तेमाल कर सकता है।

पाकिस्तान की सैन्य क्षमता

सैनिक 6,20,000		रिजर्व 5,13,000
टैंक		2,300
तोपखाना		1,467
वायुसेना		
	1.लड़ाकू विमान	353
	2.युद्धक हेलीकॉप्टर	नहीं
नौसेना		
	1.विमानवाहक पोत	नहीं
	2.पनडुब्बियां	10
परमाणु हथियार		लगभग 12

नोट : पाकिस्तान ए–5, एफ–16 विमान, गोरी –2, और शाहीन का एटमी हमलें के लिए प्रयोग कर सकता है।

(स्रोत : इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीज)

ek;korheaf=eaMydslnL; ,oamudsfoHkkx

सुश्री मायावती (मुख्यमंत्री)

सामान्य प्रशासन, निर्वाचन, न्याय, विधायी, ग्राम विकास, नियोजन, प्रोटोकॉल, नागरिक उड्डयन, अंबेडकर ग्राम विकास, निर्यात प्रोत्साहन, उद्यान, अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ, भूमि विकास एवं जल संसाध ान, परती भूमि विकास, संस्कृति, खेलकूद, लघु सिंचाई, विकलांग कल्याण, बैंकिंग ,सूचना प्रोद्योगिकी, नागरिक सुरक्षा, युवा कल्याण, प्रांतीय विकास दल तथा बाह्य सहायतित परियोजना ।

कैबिनेट मंत्री –बसपा

नसीमुद्दीन सिद्दीकी
(परिवहन, पर्यावरण तथा आबकारी विभाग)

कैलाशनाथ सिंह यादव
(विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी)

इन्द्रजीत सरोज
(समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण, महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार)

सुखदेव राजभर
(संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग)

स्वामी प्रसाद मौर्य (खादी एवं ग्रामीण उद्योग)

रामवीर उपाध्याय
(ऊर्जा तथा चिकित्सा शिक्षा विभाग)

लालजी वर्मा (सार्वजनिक उद्यम)

ठाकुर जयवीर सिंह (वन)

धर्मवीर सिंह अशोक
(कारागार व राजनैतिक पेंशन)

जगदीश नारायण राय (लघु उद्योग)

भारतीय जनता पार्टी–कैबिनेट

लालजी टण्डन
(आवास व नगर विकास, पर्यटन, श्रम, पंचायती राज, संस्थागत वित्त, तथा वैकल्पिक ऊर्जा)

ओमप्रकाश सिंह
(सिंचाई व उच्च शिक्षा, गन्ना विकास, प्राविधि ाक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण तथा कार्यक्रम विभाग)

रामप्रकाश त्रिपाठी (सहकारिता मंत्री)

महेन्द्र अरिदमन सिंह (स्वास्थ्य एवं चिकित्सा)

हुकुम सिंह (कृषि मंत्री)

रवि गौतम (राजस्व)

बाबूराम एम0काम (खाद्य एवं रसद विभाग)

राष्ट्रीय लोकदल–कैबिनेट

कोकब हमीद (ग्रामीण अभियंत्रण विभाग)

श्रीमती अनुराधा चौधरी
(लोकनिर्माण विभाग)

स्वतंत्र प्रभार–राज्यमंत्री (भाजपा)

शीमा रिजवी (इलेक्ट्रॉनिक्स)

अक्षयवर गौड़ (होमगार्ड मंत्री)

स्वतंत्र प्रभार– राज्यमंत्री (बसपा)

अनीस अहमद खान उर्फ फूलबाबू
(कृषि शिक्षा)

रामभुआल निषाद
(पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग)

(एक साक्षात्कारः)

युवा एवं जनप्रिय विधायक उदयभान करवरिया

इलाहाबाद जिले के लिए करवरिया नाम परिवार का नाम किसी परिचय का मुहताज नहीं है। इसी परिवार के एक युवा नेता उदयभान करवरिया जो वर्तमान में बारा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे है के आवास पर हमारे प्रधान संपादक जी.के. द्विवेदी एवं सहा0 संपादक रजनीश तिवारी जब पहुंचे तो वहॉ का माहौल देखकर ऐसा लग रहा था कि वास्तव में किसी नेता का आवास हो। पब्लिक की भीड़ को देखकर गुजरे जमाने के नेताओं की याद आती है जो पूरी तरह जनता के लिए समर्पित थे। वास्तव में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति उनके जैसा ही होना चाहिए। उनके आवास पर सभी लोग अपनी समस्याओं को लिए अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे थे। लोगों से पूछने पर कि क्या आपका काम यहां से होता है, कहीं आदमी देखकर तो काम तो नहीं होता है? तो एक गवई ने कहा–ऐसा क्यों कह रहे हैं। यह दरबार तो सबके लिए। चाहे वह राजा हो या रंक। सबकी बराबर सुनवाई होती हैं। यहां से कोई भी निराश होकर नहीं जाता। यह जबाब कई लोगों का था। यह माजरा हम लोगों को दो दिन देखने को मिला।

करवरिया ने चुनावी समय में यह वादा किया था कि–मैं ऐसा कुछ कर दिखाना चाहता हुॅ जिससे लोगों में मेरी अपनी अलग पहचान हो

मैंने बारा क्षेत्र की जनता की सेवा का संकल्प लिया है जिसे पूरा करने के लिए मुझे कुछ बनना है। जब तक मुझे कोई अधिकार नहीं मिलेगा मैं अपने संकल्प को कैसे पुरा करुॅगा। बारा क्षेत्र में शिक्षा, बिजली, सिंचाई, सड़क एवं पेयजल की गंभीर समस्याये है।

प्रस्तुत उनसे भेंटवार्ता के कुछ अंश–

प्र0स0ःकरवरिया जी आपके क्षेत्र में पेयजल की बहुत ही गम्भीर समस्या है। लोग पानी की बुॅद–बुॅद के लिए त्रस्त है। पानी जो जीने के लिए अतिआवश्यक है, इस समस्या पर आप क्या पहल कर रहे है?

करवरियाःइस समस्या से मैं भली–भॉति वाकिफ हुॅ। मैं इस समस्या के स्थायी रुप से निवारण के लिए प्रयासरत हुॅ। बरसात के बाद इस पर काम लगेगा।

इस संदर्भ में मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी को अवगत करा दिया है। उन्होंनें इस पर शीघ्र कार्यवाही करने का आश्वासन दिया है। तरहार में 100 एकड़ भूमि की सिचाई के लिए नहर के लिए रिर्पोट तैयार करने को इन्जीनियर को कह दिया गया है।

प्र0स0ःतत्कालिक रुप से पेयजल की समस्या के लिए आप कदम उठा रहे है?

करवरिया ःजिलापरिषद से टैंकर भेजे जा रहे है। मैंनें डी.एम. के यहॉ से ग्राम प्रधानों को खराब नलकुप को सुधारवाने के लिए आदेश भिजवा दिया है। इसके लिए मैं अपने विधायक नीधि से भी प्रयासरत हुॅ कि जो हो सकेगा उसे अवश्य करुॅगा।

प्र0स0ःआप अपने क्षेत्र के बेरोजगार युवकों के लिए आप क्या अवसर उपलब्ध करा रहे हैं?

करवरियाः लोहगरा में रिफाइनरी खुलनी है। गुजरात सरकार से बातचीत चल रही है। इसे एक साल के अन्दर पुरा करा लिया जायेगा। इस रिफाइयनरी के लिए पहले क्षेत्रीय बेरोजगारों को ही अवसर दियें जायेगे। मैं इसके पूरा प्रयास करुॅगा।

प्र0स0ः आवास के लिए आपकी क्या योजना है?

करवरियाः मैं अपने क्षेत्र के लोहगरा में 19 लोगों के आवास का कार्य प्रारम्भ करा दिया है। और अन्य क्षेत्रों के लिए प्रपोजल देकर आया हुॅ।

प्र0स0ः शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए आपकी क्या योजना है?

करवरियाः गवर्नमेंट गर्ल्स का इंटर कालेज एक बारा के लिए और एक नारीबारी के लिए प्रपोजल देकर आया हुॅ। माननीय शिक्षामंत्री जी को मुख्यमंत्री महोदया ने इसके लिए आवश्यक कागजी कार्यवाही करने को कह दिया है। बी.एस.ए शकरगढ़ ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर शिक्षण के लिए सर्वे करा लिया है। इसकी रिपोर्ट आनी

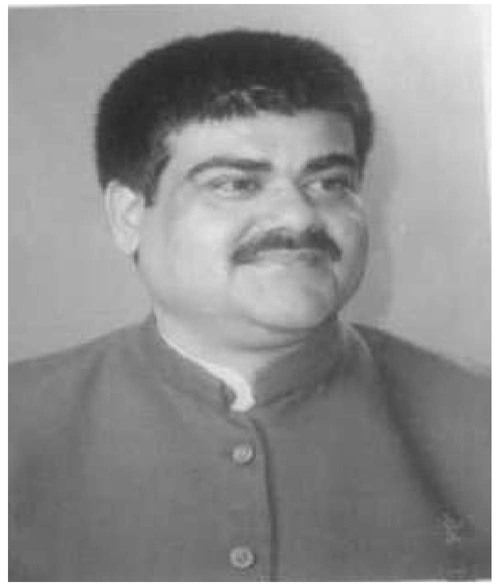

वाली है। मुझे उम्मीद है कि इस सत्र में शुरु कराने की योजना है।

प्र0स0ः सड़को के संबध में आपकी क्या योजना है?

करवरियाः अपने क्षेत्र में दो वर्ष पूर्व निर्मित सड़कों के गुणवत्ता की जॉच के संदर्भ म अधिशासी अभियंता को लिख दिया है। पूरानी सड़कों की मरम्मत तथा नयी सड़कों के निर्माण के लिए हमनें लिख दिया है। सड़कों की गुणवत्ता की जॉच का कार्य अपने कार्यकर्ताओं को सौप दिय है। वे इंजीनियरों के साथ इनका निरीक्षण कर रहे है। इससे नये कार्यो में गुणवत्ता बरकार रहेगीं।

Ph: 654717

कृष्णा इलेक्ट्रिकल्स

10,अखाड़ा मानखान, अतरसुईया, इलाहाबाद

बिजली के समानों के विक्रेता व सुधारक

नोट : हमारें यहां कुशल कारिगरों द्वारा वायरिंग मोनोब्लाक, पम्प, जेट पम्प की मरम्मत की जाती है।

प्रो0 धीरज पाल

रोजी रोटी चलती है।

शिमला–पहाड़ों पर बसा यह एक चमकीला सुन्दर शहर है। धूप में दूर से यह पहाड़ों पर चमकते टूटे कॉच सा चमकता है, दूर से ये मकान पर्वत श्रेणियों पर गुछे हुये अत्यन्त छोटे लगते है, किंतु पास से यह बड़े सुघड़ इसका सुरुचि पूर्ण होते है। हरी भरी वादियों, जंगली फूलों के बीच बहती ठंढी हवायें सुगंधिया विखेरती पर्यटकों का मन मोह लेती है। यहॉ घूमने का उपयुक्त मौसम अप्रैल से अक्टूबर तक है, पर्वतों के अचंल में सजे घर, झिलमिलाती रोशनी रात की विस्मय में डाल देती है। रात्रि में शिमला शहर ऐसा लगता है मानों कई आकाश गंगाये, निहारिकायें एक साथ असंख्य प्रकाशवलियों के साथ टिमटिमाती पूरी घाटी में उतर आनंदोत्सव मना रही हो

पर्वतीय भ्रमण स्थलों में आज इसका अपना महत्व है।

सोलंग वैली– यह अन्य स्थानों से हटकर है। इसका रास्ता अलग है यह एक लुभावनी घाटी है पहाड़ों से घिरी, रंग बिरंगी जंगली फूल, घास से लदी–फंदी बर्फ की पर्वत श्रेणियों से ढ़की है, सोलंग वैली। इसका आकर्षक यहॉ का बर्फ से बना भव्य शिवलिंग है, जो ऊँची पर्वत श्रेणियों को पिघल कर गिरते हुए बर्फिले पानी से बनता विशाल बर्फ कर शिवलिंग है। जिसका दर्शन करने पर्यटक दूर–दूर से आते है। ऊपर जाने के लिए काफी दुर्गम एवं रोमांचक बर्फिले रास्ते हैं। घाटी में बड़े–बड़े गोल पत्थर ढलान चढ़ाई लिये होते है जिन पर घोड़े की बाग पकड़े पैदल चलते है। रास्ते भर देशी, विदेशी, बच्चे, प्रोढ़, बृद्ध, कौतुहल से भरे, घोड़े की सवारी करते, सीत्कार भरते, हल्ला गुल्ला मचाते, मस्ती से घाटी के ऊँचे नीचे पथरीले विशाल वृक्षों के झुरमुट से, शिवलिंग का भव्य चमत्कार देखने आगे बढ़ते, मनोहारी दृश्य देख वरबस वाह कह उठते है।

यहॉ घाटी गहरी और नीची है चारों ओर ऊँचे पहाड़ है। अतः यहॉ ग्लाइडर पर उड़ने की सुविधा पर्यटकों को प्राप्त है। एक व्यक्ति का उड़ने में खर्च चार सौ रुपये आता है।

जाखू टैम्पल – यह अत्यन्त ऊँचाई पर स्थित एक मंदिर बालक नाथ जी, हनुमान मंदिर, रामजानकी मंदिर बहुत ही ऊँचाई पर बने है इसकी चढ़ाई कुल 3 घंटे की है सीढ़ियॉ बनी हुई है लोग घोड़े पर भी मंदिर की चढ़ाई चढ़ते है। प्राकृतिक कोलाहल के साथ यहॉ बंदरों की बहुतायत आश्चर्य रुप से है क्योंकि पूरे प्रदेश में पशु–पक्षी, जानवर बहुत न्यून मिलेंगे लेकिन जाखू पर्वत पर अनेकानेक बदंर है, यहॉ एक किवदंती है कि हनुमान संजीवन बूटी लेकर यहां रुके थे जिससे उनके पांव के चाप से यहां इस पर्वत की श्रेणी दब गई और उनके नाम से मंदिर निर्माण हुआ, यहां भजन का माधुर्य, वाद्य गीत,

☎:616521
चित्रांश टाइप इन्स्टीट्यूट
115ए/1ए, भावापुर, बेनीगंज, इलाहाबाद
हमारें यहॉ अच्छे टीचर द्वारा हिन्दी– अंग्रेजी टाइप तथा
हिन्दी–अंग्रेजी शार्टहैन्ड सीखाये जाते है।

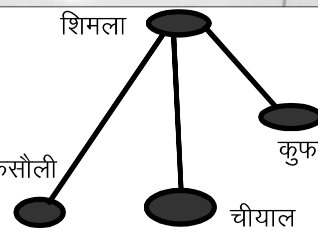

कसौली, शिमला से 66 किमी0 दूर, शिमला से कुफरी 20 किमी0, चियाल, कुफरी से 30 किमी0 दूर।

फोनः601939
खोखा राय का
ठंढा दही बड़ा
कम्पनी बाग, इलाहाबाद
प्रो0 खोखा राय

सुन्दर धुन कानों रस घोलते है।

मणि– यह भी मनाली से काफी दूर ऊंचाई पर है रित्कइंग करने योग्य यहॉ ढलान लिये हुए बर्फ के विस्तृत क्षेत्र है सैलानी यहां कम ही जाते है। लेकिना यहॉ के मूल निवासी आते जाते रहते है।

रोहतांग पास– यहॉ तक वही पहुॅच पाते है जिनका हीमोग्लोविन 1■ से

शादी–विवाह, पार्टी व अन्य
शुभ अवसरों पर हर प्रकार के
व्यंजन बनाने का कार्य पर
हेड या ठेके पर होता है।
घानश्याम यादव
आफिस : सिविल लाईन(हनुमान मन्दिर),
कमला नेहरु रोड, इलाहाबाद
निवास : बन्तरिया, कमला नगर, इलाहाबाद

ले लेना चाहिए इससे आंनद दुगुना हो जाता है और बर्फ से खेलने में आनंद आता है। शरीर गर्म रहता है।

पर्यटन

अतिशयकारी तीर्थ क्षेत्र प्रभाषगिरी

श्रीमती रेनु जैन

जैन धर्म प्राचीन धर्मो में से एक है। इसमें 24 तीर्थकरों को मान्यता दी गयी है। जिसमेमं प्रथम स्वामी ऋषभदेव है और आखिर में श्री महावीर स्वामी का नाम आता है। जैन धर्म के छठे तीर्थकर भगवान पदम प्रभू के दो कल्याणक हुए। वैसे यह स्थान प्राचीन समय से ही मुनियों की तपोभूमि रही है, कालिन्दी का प्रशांत कूल सुरम्य पर्वत की हरीतिमा और गुफाओं की एंकात शांति वाला वातावरण मुनियों के ध्यान के लिए आपनी ओर आर्कषित करता रहा है। इलाहाबाद से 65 किलोमीटर की दूरी पर जिला कौशाम्बी में यह स्थान स्थित है, इस क्षेत्र में मूरतनायक प्रतिमा भगवान पदमप्रभु की है इस प्रतिमा का बहुत अतिशय है। इसका रंग बादामी था। अफसोस का विषय है कि यह प्रतिमा कुछ समय पहले ही यहां से चोरी चली गई। इस प्रतिमा की विशेषता यह थी कि सूर्योदय के पश्चात इस का रंग परिवर्तित हो जाता है ज्यों–2 सूर्य आगे बढ़ता है प्रतिमा का रंग लाल होता जाता है, दोपहर बाद यह रंग हल्का पड़ने लगता है। यह वर्ण परिवर्तन देवी चमत्कार माना जाता है। कहते हैं कि कभी–कभी यहॉ पर्वत के ऊपर केसर की वर्षा होती है। यहां पर दीक्षा दिवस कार्तिक सुर्दा त्रयोदशी पर मनाया जाता है और भगवान का निर्माण दिवस चैत्र पूर्णिमा पर मनाते है। छठे तीर्थकर भगवान पदमप्रभु अपने राजमहल के द्वार पर बंधे हुए हाथी को देखकर विचारमग्न हो गए अपने पूर्व भवों का स्मरण हो आया उन्हें संसार की दशा देखकर वैराग्य हो गया और कौशाम्बी के मनोहर उद्यान प्रभाषगिरी जिसे पहले प्रभोसाजी भी कहते थे वहॉ जाकर कार्तिक कृष्णा त्रयेदशी को दीक्षा ले ली थी औश्र देवो ने भगवान का दीक्षा उत्सव तभी मनाया था।

सभी जैन धर्मावलम्बी इसे पवित्र तीर्थ क्षेत्र के रुप में मानते हैं। इलाहाबाद रेलवे स्टेशन के पास खुशरुबाग से प्राईवेट बसे जाती है। कभी भी अवसर मिले तो इसका अवश्य लाभ उठायें।

मदुरै का मीनाक्षी मंदिर

संहमित्रा भोई, उड़ीसा व्यूरो

मदुरै पहुंचते–पहुंचतें पांच बज गए थे। शाम उतर आई थी। पीले बसन्ती रंग और भी गहरा गए थे और संध्या का उदास रंग आकाश पर फैल गया था। इस उदासी के बीच ही मदुरै के प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर के गोपुरम् छायाचित्र के रूप में उभरने लगे थे। पश्चिम में सुर्ख लाल रंग की एक चौड़ी रेखा उभर कर घुल रही थी। धीरे–धीरे प्रकाश का स्पंदित गोला आकाश के गहरे ताल में उतर कर विलीन हो गया।

दूर सूरज तो डूब गया, लेकिन सामने जो था, वह किसी सूरज से कम नहीं था। मीनाक्षी मंदिर के सबसे ऊंचें और सबसे भव्य गोपुरम् के सामने हम खड़ें हैं। यह दक्षिणा गोपुरम है। साठ मीटर से भी अधिक ऊंचाई वाले इस गोपुरम् का निर्माण 1559 ई.में शिरामला शिवंती चेती ने कराया था, ऐसा इतिहास संकेत करता है। इतिहास बाद मे, पहले तो मंदिर की प्रदक्षिणा कर ली जाए। बच्चे तक अभी इस गोपुरम् पर डेढ़ हजार से अधिक बनी मूर्तियों में दत्त चित्त हो अटके हैं। सचमुच वास्तुकला, शिल्प और नक्काशी का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह द्रविड़ शैली है, जिसकी असल पहचान प्रवेश– द्वार के ये गोपुरम् हैं। ये गोपुरम् कई–कई मंजिल ऊंचे हैं, जो आसमान को छूते लगते हैं। लगता है हम किसी अनंत की छाया में प्रवेश कर रहे हैं। देवी, देवताओं, पशु–पक्षियों और मनुष्य आकृतियों की बेशुमार उपस्थिति आश्चर्य में डाल देती है।

हम आगे बढ़ते हैं और पूर्वी, उत्तरी तथा पश्चिमी गोपुरम् को निहार कर असंख्य मूर्तियों से युक्त खम्भों वाले बरामदे से गुजरते हुए मां मीनाक्षी मंदिर के दरवाजे पर आ खड़े होते हैं। भारी भीड़, आरती का समय है। मां के दर्शन कर पुनः पूर्वी द्वार की ओर बढ़ते हैं। गणेश आदि की भव्य मूर्तियों को निहार कर अष्ट शक्ति मंडप में हमारा प्रवेश होता है। एक सौ दस स्तंभों वाला यह मंडप बेजोड़ है। इसके प्रत्येक स्तंभ पर पाली, सिंह के समान आकृति वाले पशु, जिसके हाथी की सूंड है, देखते ही बनते हैं।

मंदिर के अम्मान गृह में देवी मीनाक्षी की भव्य प्रतिमा है और निकटवर्ती स्वामी मंदिर में सुंदरेश्वर की आकर्षक मूर्ति है।

किसने बनाया होगा यह विशाल मंदिर? हर मन में यह प्रश्न अवश्य उठता है। हमारे मन के इस सवाल का उत्तर दिया इतिहास ने। यह इतिहास था वहां बिक रही छोटी–छोटी प्रचार पुस्तिकाओं में। बताया गया है कि यह नगर तमिलनाडु का हृदय बिंदु है। करीब 2500 वर्ष पुराने इस नगर की स्थापना ईसा पूर्व छठी शताब्दी में कुलशेखर नामक पांड्या राजा ने की थी। किंवदंती है कि जब इस नए नगर का नामकरण समारोहपूर्वक किया जा रहा था, तब स्वयं भगवान शिव उस समारोह में सशरीर उपस्थित थे और उन्होंने इस भूमि एवं यहां के निवासियों पर दैविक शहद छिड़क कर अपना आशीर्वाद दिया था। तभी से इस नगर को मदुरापुरी कहा जाने लगा, जो कालांतर में मदुरै या मदुराई हो गया।

यह नगर पांड्या राजवंश की राजधानी माना गया है। इसका उल्लेख रामायण तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी मिलता है। इस प्राचीन नगर का मुख्य आकर्षण यह मीनाक्षी मंदिर ही है, जो अपनी भव्यता तथा सौंदर्य में श्विविख्यात है। इस मंदिर का निर्माण समय–समय पर विभिन्न राजाओं और रानियों ने कराया था।

गोरखनाथ की तपःस्थली

गिरिराज दूबे, ब्यूरो गोरखपुर

पूर्वी उत्तर प्रदेश में राजधानी नई दिल्ली से लगभग 800 किमी0 की दूरी पर दिल्ली–बरौनी रेलमार्ग पर गोरखपुर स्थित है।

नाथ संप्रदाय के आदि–गुरु गोरखनाथ की तपःस्थली रहा है गोरखपुर। मान्यता है कि गोरखनाथ शिवजी के अवतार थे। यहां का मंदिर और मठ ठीक उसी स्थान पर बनाए गए हैं जहां रह कर सिद्ध योगीराज गोरखनाथ ने बहुत दिनों तक गहन तंत्र–समाधि का अभ्यास किया था।

नाथ योगी संप्रदाय के महान प्रतिष्ठापक ने जब इस स्थान को अपने तपस्या के लिए चुना था। उस वक्त यह क्षेत्र वन प्रदेश था। दूर–दूर तक जनजीवन का नाम नहीं था। वर्तमान समय में मंदिर परिसर लगभग एक सौ एकड़ भूमि में फैला हुआ है। परिसर में ही तालाब, पार्क, आम का बगीचा और श्मशान भूमि भी है। मुख्य मंदिर के पीछे एक दालान में देवी–देवताओं की तश्वीरें लगीं हुयी है। मंदिर के केंन्द्र में एक विस्तृत यज्ञ स्थली है जो गोरखनाथ के पवित्र आसन के रूप में मानी जाती है। इस यज्ञ स्थली पर शिव या गोरखनाथ में से किसी की भी मूर्ति स्थापित नहीं है। प्रत्यक्षतः यह रिक्त स्थान है परन्तु अध्यात्म की दृष्टि से यह उस परम सत्य और आदर्श की ओर संकेत करता है। जिसका स्मरण प्रत्येक योगी को पूजा के समय करना चाहिए। मंदिर के भीतर मां काली, बुद्ध एवं गणेश जी और हनुमान जी की मूर्तियां है।

मंदिर के भीतर वेदी के एक ओर शांत निश्चल दीपशिखा है जो रातदिन सतत रूप से मंद–मंद जलती रहती है और इसे कभी बुझने नहीं दिया जाता है। मठ के भीतर श्मशान भी है। यहां योगियों का मृत भौतिक शरीर समाधिस्त किया जाता है। मंदिर के पास एक बड़ा तालाब है। तालाब के किनारे एक सोते हुए मानव की प्रतिमा बनी हुयी है। ऐसा लगता है कि एक बड़ी आकृति वाला व्यक्ति कालीन बिछा कर सोया हुआ है। यह व्यक्ति अन्य कोई नहीं बल्कि पांडु पुत्र भीम हैं। महाभारत युद्ध से पहले वह बाबा गोरखनाथ से आर्शीवाद और सहयोग लेने के लिए वहां गयें थे। हारे–थके होने के कारण वहां विश्राम करने लगे। इस तालाब में कार्तिक में छठ पर्व का धूम–धाम से आयोजन होता है। मकरसंक्राति के दिन एक लाख से अधिक पुरुष और स्त्रियां परम देवता के दर्शन से अपने को पवित्र करने और उनके लिए कुछ खाद्य पदार्थ अर्पित करने आते हैं। बहुत दिनों तक यह मठ योग संस्कृति का केंद्र रहा है। मुसलमान बादशाहों ने कई बार मंदिर को तोड़ा। योगियों को मार कर भगा दिया। गोरखनाथ परम्परा में यहां अनेक देवी शक्ति से संपंन्न महायोगी हो चुके हैं। बाबा गंभीर नाथ को गोरखनाथ का दूसरा स्वरूप माना जाता है। बाबा बालक नाथ, बाबा वीरनाथ भी प्रसिद्ध योगी हो चुके हैं।

गोरखपुर आने वाले पर्यटकों को गीताप्रेस और गीता वाटिका जरूर देखना चाहिए ये दोनों संस्थान हनुमान प्रसाद पोद्दार की कृतियां हैं। गीताप्रेस सेखपुर में गीताप्रेस रोड पर स्थित है।

प्रेस का कलापूर्ण द्वार तथा लीला चित्र मंदिर दर्शनीय है। लीलाचित्र मंदिर में भगवान राम और कृष्ण के सभी औतारों, भगवान शिव और भगवती के विविध मित्र तथा संतों और भक्तों की लीलाओं के सभी हाथ से बनाये गये चित्र लीला क्रम में लगाये गये हैं। गीतावाटिका असुरन बाजार के पास है। यहां स्व0 हनुमान प्रसाद पोद्दार रहा करते थे। इसी स्थान पर उन्हें नारद जी के दर्शन हुए थे। यहां का मंदिर देखने योग्य है। यहां लगभग बीस वर्षों से बिना क्रम टूटे लगातार किर्तन हो रहा है। यहां प्रतिदिन शांय काल भव्य आरती का आयोजन होता है। जिसमें भक्त श्रद्धा से भाग लेते हैं।यहां ठहरने के लिए अनेक धर्मशाला व होटल बने हुए है। रेलवे स्टेशन के पास गेस्ट हाउस भी है।

डाली ऑवला लड्डू, ऑवला मुरब्बा
स्वाद के साथ स्वास्थ्य के लिए खांए
निर्माताःडाली फ्रुट प्रोडक्ट्स
बिक्री केन्द्र (जौनपुर): मुहल्ला–सिपाह, जौनपुर

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है
विगत पॉच वर्षो से समाज सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित
जी.पी0एफ0सोसायटी
एफ.सी.एल.सी. नितीन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद
आपसे विभिन्न स्थानों पर संचालित 0 अंध विद्यालय 0 विकलांग केन्द्र 0 **शिक्षा केन्द्र के लिए** आर्थिक/समाजिक/शारीरिक/कपड़े या अन्य सामग्री की सहयोग की अपील करता है। **प्रस्तावित अनाथालय व बृद्धआश्रम :**
ग्राम –टीकर, पोस्ट–टीकर, (पैना) जिला –देवरिया

काशी सबसे न्यारी

पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा के तट पर स्थित, भगवान शंकर की महिमा से मंडित काशी (वाराणसी) को विश्व का प्राचीनतम नगर होने का गौरव प्राप्त है। यहां पर शक्तिपीठ है,ज्योतिर्लिंग है तथा तथा यह मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में से एक है। वरुणा व असी के मध्य स्थित होने के कारण इसका वाराणसी नाम प्रसिद्ध हुआ। बौद्धतीर्थ सारनाथ पास में ही स्थित है। शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन पंथों के उपासक काशी को पवित्र मानकर यात्रा–दर्शन करने यहां आते हैं। भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं पास के सारनाथ में दिया था। आदि शंकराचार्य ने अपनी धार्मिक दिग्विजय यात्रा यहीं से प्रारम्भ की थी। कबीर, रामानंद,तलसी दास सदृश संतों ने काशी को अपनी कर्मभूमि बनाया। भारत की सांस्कृतिक एकता को अक्षुण्ण रखने में काशी का विशेष योगदान है। यहां पर तीन विश्वविद्यालय तथा कई संस्कृत अध्ययन केंद्र हैं।

काशी के दर्शनीय स्थलों में विश्वनाथ मंदिर, दुर्गा मंदिर, तुलसी मानस मंदिर, भारतमाता मंदिर, संकटमोचन मंदिर, सारनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं। विश्वनाथ मंदिर पहुंचने के लिए एक पतली, सकरी गली में से होकर जाना पड़ता है जिसके दोनों ओर दुकानदारों की भीड़ होती है। चटख लाल रंग का यह मंदिर कभी कलात्मक दृष्टि से भव्य रहा होगा पर आज गली–मोहल्ले के किसी छोटे मंदिर के समान लगता है। एक छोटे से कमरे में शिवलिंग है जहां श्रद्धालुओं की अपार भीड़ लगती रहती है।

संकटमोचन मंदिर हनुमान का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है। दुर्गा मंदिर वाराणसी के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में नागर ढ़ंग की भवन निर्माण कला के आसक कला के आधार पर कराया गया था। इसके पास ही तुलसी मानस मंदिर है। इसका निर्माण 1969 में किया गया। मध्यकाल में गोस्वामी तुलसीदास यहीं रहा करते थे।

काशी अपने घाटों के लिए भी प्रसिद्ध है। गंगा के किनारे लगभग 80 घाट हैं। मणिकर्णिका घाट, दशाश्वमेध घाट,केदार घाट, हनुमान घाट आदि प्रमुख घाट हैं। घाटों का सौंदर्य सूर्योदय की बेला में देखने लायक होता है।

गंगा तट की शाम आकर्षक होती है। गंगा के किनारे बने धर्म के नाम पर एक बछिया की पूंछ पकड़ाकर दिनभर पैसे लिए सैकड़ों लोगों को बैतरणी पार कराने वाले पंडे देखे जा सकते हैं।

आलमगिरी मस्जिद तथा ज्ञानवापी मस्जिद भी दर्शनीय है। औरंगजेब ने मंदिरों को तुड़वाकर इन मस्जिदों को बनवाया था।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है। पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय 2000 एकड़ भूमि क्षेत्र में फैला हुआ है। विश्वविद्यालय के परिसर में ही बिड़ला जी द्वारा बनवाया गया एक और विश्वनाथ मंदिर है। इसके अलावा यहां निर्मित भारत कला भवन (आर्ट गैलरी) कलाकृतियों का अच्छा संग्रह है।

देश की सांस्कृतिक राजधानी काशी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी प्रतीत होती है। निराशा और संकट की घड़ी में काशी सभी को अपनी गोद में शरण देती है।बंगालकी विधवा, वृद्धाओं एवं युवतियों के लिए काशी सबसे बड़ी आश्रय नगरी है। काशी में मृत्यु का अर्थ है– मोक्ष, जन्म –जन्मांतरों के बंधनों से पूर्ण मुक्ति।

बनारसी साड़ियों के लिए तो वाराणसी मशहूर है ही,गर्मियों में आम के पने का जलजीरा, बनारस का बनारसी पान, लंगड़ा आम और लू से बचने के लिए बनारसी आंवले का पेय भी यहां खूब प्रचलित है।

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम–2

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी "नैना"

एम.ए., एम0सी0ए0,

प्रकाशित रचनाएं– हिन्दी दैनिक "आज", न्यायधीश, प्रयागराज टाईम्स, अमर उजाला, मासिक पत्रिका " विश्व एकता संदेश, गुड़िया, लोकध्वनि, कम्पटीशन रिफ्रेसर, विज्ञान प्रगति। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव

सम्पर्क सूत्र: नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

दूसरी किस्त

पिछले अंक में आपने पढ़ा–

अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल को दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है। और दोनों एक दूसरे को चाहने लगते हैं। लेकिन इस बात की खबर सिर्फ सावन को होती है। परीक्षा समाप्त होने बाद अनिल व अनु एक दूसरे से मिल नहीं पाते। एक दूसरे से न मिल पाने के कारण दोनों का हाल बेहाल हो जाता है।

सावन अनु के घर का पता लगाने निकलता है और अनु की सहेली शालू से उसकी मुलाकात हो जाती है। सावन की बातों से शालू प्रभावित होती है और अनु के घर का पता बता देती है।

अनिल को जब पता चलता है तो वह खुशी से फूला नहीं समाता। अनिल की मम्मी सावन को अपना दूसरा बेटा मानती है और अगले जन्म में सावन की मॉ बनने के लिए प्रार्थना करती है।

अनिल व सावन अनु के घर जाने का कार्यक्रम बनाते है।

अनिल और सावन जीकेपुरम् डॉ0 रेखा के कमरे पर पहुँचते है। अनिल दरवाजा खटखटाता है, उनका नौकर मोहन दरवाजा खोलता है।

अनिल नौकर से अपनी दीदी डॉ0 रेखा के बारे में पूछता है। नौकर उसे बताता है कि डॉ0 रेखा अन्दर कमरें में है। अनिल और सावन दोनों कमरे में जाते है और डा0 रेखा से मिलते है–

अनिल : प्रणाम दीदी।

(सावन भी अनिल का अनुसरण करता है)

अनिल : दीदी, यह मेरा बहुत ही फास्ट फ्रेंड सावन है। जिसके बारे में मम्मी आपसे बातें कर रही थी।

डा0 रेखा : अच्छा तो तुम्ही हों, सावन। तुमसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। मै तुमसे खुद मिलना चाहती थी। तुम्हारी प्रशंसा के तो आंटी पुल बॉध रही थी।

सावन : दीदी, आप मुझे शर्मीन्दा कर रही है।

डा0 रेखा : नो सावन, आई सेज रीयली, नो एनी फ्लैटिंग अन्डरस्टुड। आई नेवर लाइक फ्लैटिग माइ सेल्फ।

सावन : सॉरी दीदी।

सभी चाय नाश्ता करते हैं। अनिल और डा0 रेखा अपनी कुछ पारिवारिक बातें करने लगते है। सावन मेज पर से 'स्नेह' नामक पत्रिका उठाकर देखने लगता है। लेकिन वह पढ़ता कम और बाहर देखता ज्यादे। वहॉ का स्वच्छ वातावरण, चारों तरफ हरियाली, उसे बेहद पसंद आती है। उसी वक्त सावन की नजर हरियाली पर पड़ती है। चार–पॉच लोगों की एक टोली उसी मकान की तरफ चली आ रही है। उसी टोली में हल्के बैगनी कलर का सूट, गुलाब के समान लालिमा लिए चेहरे पर काले फ्रेंम सें मंडित प्यारा सा चश्मा, वाली लड़की भी होती है, पर सावन की नजर पड़ती है। सावन सोचने लगता है –

"वाह क्या हंसीन अप्सरा है। ऐसा लगता है मानो स्वर्ग से कोई अप्सरा वाहन न मिलने पर अपनी सहेलियों के साथ अठखेलियॉ करती हुई पैदल ही मदमस्त हाथी की तरह, मचलती हुई, गंगा के पवित्र जल में स्नान करने जा रही हों।"

सावन एक बार देखता है तो बस देखता ही रह जाता है। उसकी पलकें एक पल को भी बंद नहीं होती है। वे लोग कब कमरें में प्रवेश कर गयी इसका उसे आभास भी नहीं हुआ। सावन तो बस उस लड़की के रुप में मग्न थां

अनिल : सावन, सावन (हिलाता है।)

सावन : (चौकते हुए) अरे..... क्या हुआ?

सावन को लगता है कि जैसे वह कोई हंसीन सपना देख रहा हो और उसी समय कोई उसे जगा दे और जागते ही मीठे स्वप्न की सुंदरी स्वयं सामने नजर आ जाए। उसी तरह सावन उस स्वप्न सुदरी, फूलों की खुशबू के झोके को लिए हुए, बसंत ॠतु की हरियाली को देखकर आश्चर्य चकित हो जाता है। ऐसा लगता है मानां

> 0 वाह क्या हसीन अप्सरा है। ऐसा लगता है, मानों स्वर्ग से कोई अप्सरा वाहन न मिलने पर अपनी सहेलियों के अठखेलियॉ करती हुई पैदल ही मदमस्त हाथी की तरह, मचलती हुई पैदल ही मदमस्त हाथी की तरह, मचलती हुई गंगा के पवित्र जल में स्नान करने जा रही हो।
>
> 0 यार अनिल, किसी ने ठीक ही गाया है गोरे –गोरे मुखड़ा पर काला चश्मा
> तौबा खुदा खैर करे, खूब है करिश्मा।

किसी युवा कवि की कविता या एक चित्रकार की अपनी स्वयं की प्रेमिका काल्पनिक चित्र जो वर्षो से अधूरा पड़ा हो और वह स्वप्न मलिका स्वयं सामने आ जाए। वह हसीना सावन को साक्षात स्वप्न सुंदरी लग रही थी जिसे आज तक किसी ने भी नहीं देखा हो। वह उसे पहली बार देख रहा हो।

सावन : अनिल, यार। वाह क्या हंसीना है? किसी ने ठीक ही गाया है–

गोरे–गोरे मुखड़े पर काला–काला चश्मा,
तौबा खुदा खैर करें, खूब है करिश्मा।

अनिल : चुप बे, पता नहीं कौन है? दीदी सुनेगीं तो क्या कहेगी।

डा0 रेखा के कहने पर सभी यथा स्थान बैठते है तथा एक दूसरे से परिचय कराने की बात करती है। एक लड़की परिचय कराती है–

"मेरा नाम गबली यानी बबली है। मैं अनिल भइया की बुआ की लड़की हूँ। मैं एम. ए. कर चुकी हूँ और वर्तमान में एक जगह टीचिंग का कार्य कर रही हूँ। वट टील टूडे आएम अन मैरिड।"

(सभी ठहाका लगाकर हॅसते है।) बबली ही अपने साथ आए सभी लोगों का परिचय कराती है।–

"यह मेरे बगल वाली जो है यह मेरी भाभी लगती है और इनका रेखा दीदी से गहरा रिश्ता है। आप लोग भी इन्हें भाभी कह सकते है। और यह आसमानी कलर की साड़ी वाली जो है वह भी मेरी भाभी है। पर आप लोग इन्हें एक गायिका के रुप में जाने तो अच्छा रहेगा। ये बहुत ही गायिका है। इनका प्रोग्राम रेडियों स्टेशनों से अक्सर आता रहता है और यह जो लड़का है, यह मेरा भतीजा है, यह बी0ए0 कर रहा है। अब आप लोग इस बैंगनी कलर के सूट वाली लड़की के बारे में जानना चाहेगे।।

(सावन को तो बस उसका ही परिचय जानने की इच्छा और प्रतिक्षा थी)

बबली : ये है मिस मोना। (जोर देते हुए) यह बी0ए0 तृतीय वर्ष की छात्रा है और साथ में कम्प्यूटर डिप्लोमा भी कर रही है। संगीत व डांस में इनकी विशेष रुचि है।

फोटो डालना है।

मोना का परिचय कराते वक्त बबली बार–बार सावन के चेहरे को देखकर मुस्कराती है। इधर सावन बड़े ही ध्यान से सुनता रहता है और मोना सिर झुकाए बैठी रहती है। इस अवस्था में वह और भी अधिक कयामत ढा रही होती है। अब सावन अपना परिचय बताता है–

"इस बंदे को सावन कुमार जीके कहते है। और मैंने अभी हाल में ही बी0ए0 तृतीय वर्ष की परीक्षा दी है और अभी–अभी कम्प्यूटर डिप्लोमा का फाइनल इक्जॉम दिया हूँ और इस समय डी0बी0ए0 ज्वाइन किया हूँ। "

अनिल : अबे, क्यों पूरा–पूरा गच्चा खा गया। सॉरी! मैं इस बंदे का परिचय करादूँ। यह तो अपने मुख्य बिन्दुओं को छुपा ही गया। यह बन्दा हमारा दिल है पर लड़की नहीं लड़का।

(सभी ठहाका लगाकर हॅसते है।)

वैसा प्यार करो

जागृति नगरिया
(कल्चरल सेक्रेटरी, जी.पी.एफ.सोसायटी,)

जैसे सर्द हवा के तन से छूते ही इक कम्पन सी हो जाती है,
जैसे भँवरों के चुंबन से कली फूल बन खिल जाती है,
जैसे चाँदनी रातों में चकोर मतवाली होकर गाती है,
जैसे स्वाति की इक बूँद से सीप मोती बन जाती है,
जैसे मेघ की फुहार पाकर धरती हरी–भरी हो जाती है,
जैसे नन्हीं कोपल ओस से पौधा वन बढ़ जाती है,
जैसे दिये के सँग बाती मिलकर रोशनी बिखराती है,
जैसे रात के सँग प्रातः मिलकर नया दिन बनाती है,
तुम मुझे वैसा प्यार करो......., तुम मुझे वैसा प्यार करो..... ।

यह मेरा सबसे फास्ट फ्रेंड है। यह बहुत ही खुशमिजाजी, डिक्टेटिव माइन्डेड, निःस्वार्थी व दिल का बहुत ही सॉफ है। इसके पिता जी इंसपेक्टर है। मगर यह बंदा यहॉ मात्र पढ़ने के उद्‌दश्य से अकेले ही रहता है। साथ ही कविता, कहानी, डांस एवं सगीत का बेहद प्रेमी है। एक बहुत ही अच्छा कलाकार भी है। 'बोलती आँखे', 'कलयुग की नागिन', धारावाहिक और 'रोड इंसपेक्टर', बिछड़ा साथी' व 'सूखा सावन' में काम कर चुका है और सभी विभिन्न रोल अदा किया है।
(मोना बीच में ही) "मुझे तो इनका कम बहुत ही अच्छा लगा था, पर पता न मालुम होने के कारण चाहते हुए भी बधाई न दे सकी।
(सावन मन में सोचता है–अब तो दे दो ना बधाई।)

मेरा जीवन

जगदम्बा प्रसाद शुक्ल

मेरा जीवन
सिगरेट की उस जली हुई
राख की तरह है,
जिसका कोई मूल्या नहीं
अस्तित्व नहीं।
अन्धकारमय भविष्य रूपी
माचिस की तीली
मजबूरी की डिबिया पर
घिसट घिसट
शरीर रूपी सिगरेट को
जला रही है
सुलगा रही है
परन्तु क्या करूॅ
कहॉ जाऊॅ
मजबूर जो हूॅ
असहाय जो हूॅ
कुछ करूॅ
या जलता रहूॅ
,सिगरेट की तरह
और जीवन बना दूॅ
उसकी राख की तरह

आपने तो जैसा काम किया है, रियल लाइफ में भी वैसे ही है। कोई परिर्वतन नहीं। (सावन की ओर मुखातिब होकर) पता नहीं क्यों आपको देखकर मुझे ऐसा लगा कि चेहरा जाना–पहचाना लग रहा है। मगर संकोचवश पूछ न सकी। रियली यू आर ग्रेट, इतने गुण एक साथ।
(वह पता नहीं और क्या–क्या बोलती मगर बबली के द्वारा चीटी काटने के कारण वह झेप जाती है।)
सावन सोचता है–"निगाहें मिलते ही दिल भी मिल जाए, यह इत्तिफॉक कहीं बार–बार होता हैं।
अनिल : (बात आगे बढ़ाते हुए)– यह बंदा क्या–क्या नहीं मत पूछिए। यह प्रेमियों की जान है। मगर खुद इससे दुश्मनी। दोस्तों की गर्लफ्रेंड और कुछ परिचित की लड़कियों को छोड़कर किसी और को अपने पास फटकने तक नहीं देता। जैसे वे इसकी दुश्मन हो।
बबली –हाय राम! (सिसियाते हुए) लड़कियों से इतना बैर। फिर ये बेचैनी कैसी?
सावन कुछ न बोल सका।
वह तो अपने सपनों में ही खोया हुआ था। वह ख्वाबों में ही एक गाना गाता है–
एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा
जैसे खिलता गुलाब, जैसे शायर का ख्वाब
जैसी उजली किरण, जैसे मन्दिर में जलता दिया ओ।
1.क्या सावन मोना से अपने प्यार का इजहार कर पाता है?
2. क्या मोना भी सावन को चाहती है?
3. क्या अन्जाम होगा सावन के इस पहले प्यार का।
4. क्या अनिल अनु से मिल पाता है।
5. क्या अनिल को सावन अपने मन की बात बताता है?
जानने के लिए पढ़िए अगले अंक में प्रकाशित 'नैना' का धारावाहिक उपन्यास "दिल का पेगाम" का अगला भाग।

मुलाकात अधूरी ना हो

रजनीश कुमार तिवारी 'राज'

अधरों से अधरों को मिलने दो
कोई प्यास अधूरी ना हो
प्रेम के अंकुर को खिलने दो
कोई साख अधूरी ना हो
नैनों से नैनों को मिलने दो
कोई बात अधूरी ना हो
तुम हर पल साथ चलो
कोई राह अधूरी ना हो
मन से मन को मिलने दो
कोई कसर अधूरी ना हो
दिल से दिल को मिलने दो
ये याद अधूरी ना हो
सपनों में तुम रोज मिलो
कोई रात अधूरी ना हो
दो बोल तो मुॅह से बोलो
'राज' से मुलाकात अधूरी ना हो।

आवश्यक सूचना

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन/ शादी शादी वर्षगांठ/ होली/ परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु 0 संपादक 0 संवाददाता
0 विज्ञापन प्रतिनिधि
0 विज्ञापन एजेंट

साहित्य–संगम

अहों भाग्य हमारे जो आप जैसा सम्पादक मिला : जी.के.द्विवेदी

"भारतीय साहित्य–सुधा–रत्न" से सम्मानित –डॉ0 कुसुमलता मिश्रा

प्रयाग की गौरव, हिन्दी जगत की सर्वाधिक लोकप्रिय कवयित्री चन्द्रमुखी ओझा "सुधा" की स्मृति में, 28 अप्रैल 2002, रविवार को सायंकाल 5 बजे हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग के प्रांगण में भारतीय साहित्य सुधा संस्थान

एक कार्यक्रम में पुरस्कृत करती हुई डॉ0 कुसुमलता मिश्रा

के तत्वाधान में हिन्दी सेवियों का सारस्वत सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में हमलोगों की खास दिलचस्पी का कारण रहा हमारी आदरणीया, सम्मानिया सम्पादका महोदय का नाम भी भारतीय साहित्य–सुधा–रत्न 2002 सम्मान मे होना। आपकी कवितायें वैसे अक्सर पत्रिका अथवा जी.पी. एफ.सोसायटी द्वारा आयोजित काव्य पाठों में तथा अन्य बड़े आयोजनों मे सुनने को मिलता रहा है। लेकिन हमारी सम्पादक महोदया की रचनांए इतनी उच्चकोटि की होगीं इसका हम लोगों का भान नहीं था। हमारी सम्पादक महोदया उन नामी गिरामी हस्तियों में एक थी जिन्हें यह पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार पाने वालें में

1. श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय (प्रयाग)
2. श्री हरिमोहन मालवीय (प्रयाग)
3. श्री अनिल कुमार मिश्र (वाराणसी)
4. श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा (प्रयाग)
5. श्री सत्यप्रकाश गर्ग (हापुड़)
6. डां0 सरिता शर्मा (पाउटा साहब)
7. श्री युक्तिभद्र दीक्षित (प्रयाग)
8. श्री विजय कुमार शर्मा (देहरादून)
9. श्री प्यारेलाल "आवारा" (प्रयाग)
10. श्री आचार्य चक्रपाणि पाण्डेय (लखनऊ)
11. डॉ. शारदा पाण्डेय (प्रयाग)
12. डॉ. सुशील राकेश (कन्नौज)
13. डॉ. शैलनाथ चतुर्वेदी (लखनऊ)
14. सुश्री प्रमिला भारती (लखनऊ)
15. श्री जगदीश रुद्र (प्रयाग)
16. श्री विजय प्रकाश त्रिपाठी (कानपुर)
17. श्रीमती सुशीला चौहान (प्रयाग)
18. श्री रुपकिशोर माहेश्वरी (लखनऊ)
19. श्री चौ0 जितेन्द्र सिंह (प्रयाग)
20. श्री विमलप्रकाश (आगरा)

पत्रिका परिवार की ओर से डॉ0 कुसुमलता मिश्रा 'सरल' को हार्दिक बधाइया। प्रस्तुत है उनकी एक रचना है– चॉद छूने की लालसा। उनका **सम्पर्क सूत्र है–**

डॉ0 कुसुम लता मिश्रा (सरल)
132 के.वी. सबस्टेशन, आई.टी.आई काम्पलेक्स, आई.टी.आई, नैनी, इलाहाबाद
दूरभाष : 686238

सोने चॉदी के जेवरात के धर्मकांटे की विश्वसनीय दुकान
श्याम जी टंच सेन्टर एवं इलेक्ट्रॉनिक धर्मकांटा
67–चौक, घासीराम मार्केट, जवाहर स्कायर, मीरगंज, इलाहाबाद
प्रो0 राजेश वर्मा

चॉद छूने की लालसा

चॉद छूने की लालसा
घनीभूत क्यों?
ये तुम्हारे अन्दर है
असंख्य इच्छायें, भाव–किरण रश्मिया,
सुगबुगाती हैं,
रह–रह संसार में आलोड़ित
होने की कामना से
अकुलाती है,
पिपासा के ज्वार अभावों की भार से
भाटा से ठहरते,
मानवता की पूँजी लूट
दानवता का दैत्य समुद्र
कितना फेनिल है,
हाहाकार कर बढ़ रहा है,
चॉद को देखकर
मत करो तुम श्रेष्ठ–पूत
ऐसा मनुहार मुहार
आकाश का चमकता चॉद तो
अंगूर खट्टा सा है
उसका दामन भी दागदार है
वह समरस हीन ह
कभी श्वेत मन तो कभी
कभी कालिमा लीन है,
तुम अपने अन्तर के
चॉद को बर्हिमुख कर दो
मावसी तिमिर पूर्णिमा में
परिवर्तित कर दो
भूले राह के राही को
प्रकाश देकर,
चमत्कृत कर दो
यह चॉदनी होगी शाश्वत,
बना कर व्यक्तित्व ही
बन जाओ धरती का
चॉद
चॉद छूने की ललसा
का मिथक तोड दो
मिल आज।

डॉ0 कुसुम लता मिश्रा ''सरल''

कहानी

अपंगता बोझ नहीं

✍ दर्द दिल राज

ये कहानी उस लाचार और मासूम सी लड़की संध्या की है जो अपनी सौतेली मॉं से तंग होने के बाद भी अपना आत्मविश्वास नहीं खोया और अपंग होने के बाद भी अपने आप को कभी अपंगता का बोझ नहीं समझा। बल्कि वो सखियों के सहारे अपने बचपन का सपना पूरा किया और दुनिया में एक बतौर डांसर नृत्य कला के जरिये अपने आप को जगा दिया और बता दिया की इन्सान चाहे तो क्या नहीं कर सकता, मगर आत्मविश्वास और सच्ची लगन होना जरूरी है। निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्मीं संध्या आज उसके पास क्या नहीं है। न जाने कितने लड़को की शादी का ऑफर आ रहें हैं, पर उसे तो अभी और कुछ करना है, संध्या की वही मां जो उसे कोसते न थकती थी, अब अपनी अमीर संध्या बेटी से एकदम दबकर रहती है। शकुंतला देवी संध्या की शौतेली मां और उसके दो शराबी नालायक बेटे पिन्टू और चिन्टू अक्सर बात–बात में उससे लड़ते और परेशान करते थे। पर संध्या का सपना साकार करने में सबसे बड़ा हाथ है नेहा का जो संध्या की सौतेली मां की बेटी होने के बावजूद संध्या के लिए जान देती रहती है। रामेश्वर नाथ जी संध्या के पिता हैं।

☎ 698989, 699112

CYBER POINT

मधु प्रेस के बगल, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

कम्प्यूटर जॉब वर्क, थीसीस वर्क, प्रोजेक्ट वर्क

स्क्रीन प्रिटींग, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, पम्पलेट, पोस्टर की डिजाइनिंग का एकमात्र और उत्कृष्ठ संस्थान

प्रो0 हरि प्रताप सिंह

शकुन्तला देवी–चल री उठ, सूरज कब का सर पर चढ़ आया है। तू अभी तक सो रही है, घर का काम–काज कौन करेगा।

नेहा–क्यू मां क्या दीदी के बल पर ही घर का सारा काम पड़ा है कोई और भी लोग तो घर में हैं।

शकुन्तला देवी– तुझको आज कालेज नहीं जाना है।

संध्या–पर क्यों मां ।

शकुन्तला देवी – क्योंकि आज–कल तू कालेज के बहाने खूब घूमने–फिरने लगी है।

(संध्या को अक्सर कालेज से आने में देर हो जाया करती थी, क्योंकि उसे शौक है एक डांसर बनने का और डान्स ही उसकी जिन्दगी है। मगर ये बात सिर्फ नेहा को ही अच्छा लगता। नेहा को पता है कि संध्या डान्स कालेज से जुड़ी है जिसकी वजह से उसको हर रोज देर होती है मां के डॉंट से संध्या रोने लगती है, इतने में नेहा आती है।)

नेहा– अरे दीदी क्या हुआ तुम्हें, क्यों रो रही हो, क्या मां ने कुछ कहा?

संध्या–नेहा मुझे कालेज जाना है, यहाँ पर मेरा दम घुट रहा है।

नेहा–मां आज मेरी एक सहेली का बर्थडे है और मैं संध्या दीदी को लेकर जा रही हूॅं।

शकुन्तला–तेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है। तू इस लंगड़ी को लेकर जायेगी।

नेहा– हां मां।

शकुन्तला देवी–जरा सोंच! तेरी कितनी बदनामी होगी। तेरी सहेलियां सोंचेगी कि ये लंगड़ी कौन है?

नेहा–सोंचने दो मां, मुझको न तो दुनिया कि परवाह है, न बदनामी का डर। मान लो यदि तुम्हारी बेटी यानि मैं लंगड़ी हो जाऊं तो क्या तुम मेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करोगी। वाह मां वाह, ये तो भगवान की देन है। मां, इसमें हम और तुम कर ही क्या सकतें हैं। चलिए संध्या दीदी।

संध्या–नहीं नेहा मैं नहीं जाऊंगी बहन।

नेहा–अरे तू मां की बातों पर क्यों जाती है? चल मेरे साथ।

(नेहा संध्या को लेकर जाती है और नेहा की सहेली बहुत बड़े घर की होती है, उस पार्टी में डांस चल रहा है म्यूजिक की आवाज संध्या की कानों में पड़ते ही उसके पैर खुद–बखुद थिरकने लगते हैं। उससे रहा नहीं जाता और उसे नेहा बैसाखी पकड़ा देती है। संध्या वैसाखियों के सहारे नृत्य करना शुरू कर देती है और पूरे जोश के साथ नृत्य करती है कि नाचते–नाचते यह भी भूल जाती है कि

उसके हाथ में बैसाखी है और वो वैशाखियों को छोंड़कर जैसे ही हाथ ऊपर करती है, बहुत जोर से गिर जाती है। पूरी पब्लिक हंसने लगती है और वह हंसी सहन नहीं कर पाती, जोर–जोर से रोने लगती है, पर उसका हौसला नेहा फिर एक बार बढ़ा देती हैं।

नेहा–तुम रोओ मत दीदी, आज मैंने तुम्हारी प्रतिभा देख ली है। तुम नृत्यकला की देवी हो दीदी। मैं तुम्हें जयपुर ले जाऊँगी। पता है दीदी, जयपुर में नकली अंग कुछ इस तरह सफाई से बनाये जाते हैं कि उनका नकली होना आसानी से पता ही नहीं चलता।

संध्या–आज दुनिया मुझ पर हंस रही है नेहा, एक तू है मेरी बहन, तेरा ये हौसला मुझको रास्ता दिखला रहा है, वरना भला मैं अकेले क्या कर सकती हूँ।

(इधर नेहा संध्या को पार्टी से लेकर घर आती है तो पता चलता है कि नेहा को लड़के वाले देखने आ रहे हैं।)

शकुन्तला–बेटी नेहा कल तुम तैयार रहना क्योंकि लड़के वाले तुम्हें देखने आ रहे हैं।

नेहा–मां ये तुम क्या कह रही हो? पहले तो दीदी की शादी होगी। मेंरी भला क्यों इतनी जल्दी पड़ी है।

शकुन्तला देवी –कौन करेगा उस लगड़ी से शादी। अगर तुझे उसकी शादी की इतनी ही जल्दी पड़ी है तो कोई लंगड़ा–लूला, अंधा लड़का उसके लिए खोजना शुरू कर दे।

(नेहा अपनी मां से संध्या के बारे में काफी बात–चीत करती है। मामला शान्त होता है अगले दिन घर में मेहमान आते हैं)

नेहा–दीदी आज आप को मेरी एक बात माननी पड़ेगी।

संध्या–कौन–सी बात नेहा?

नेहा–पहले तुम वादा करो दीदी की तुम मेरे लिए ये काम जरूर करोगी।

संध्या–ऐसा कौन–सा काम है नेहा जो तुम इतना मुझ पर दबाव डाल रही हो।

नेहा–पहले तुम मेरी कसम खाओ कि तुम. ....।

संध्या–मैं तेरी कसम खाती हूं बाबा की तेरा जो भी काम होगा जरूर करूगी बस।

नेहा–तो चलो मैं मुम्हे आज भर के सजाऊगी।

संध्या–तू ये क्या बोल रही है, लड़के वाले देखने तुझको आये हैं और तू मुझको संजायेगी

नेहा–यही तो राज की बात है दीदी की मै शादी करना नहीं चाहती हूं। इसलिए अपनी जगह पर तुम्हे भेज रही हूं।

संध्या–पर शादी के बारे में मेरा भी कोई विचार नहीं है नेहा, और फिर मानलो मां को ये बात बुरी लग जाय तो।

नेहा–यही तो हम चाहते हैं दीदी की किसी तरह ये लड़के वाले यहां से भागें। दीदी मैंने तुम्हारे हर काम में साथ दिया है और ये मेरा छोटा सा काम इसी में अपनों की पहचान होती है, प्लीज दीदी।

संध्या–ठीक है अब तो तू खुश है।

नेहा–ओ मेरी प्यारी दीदी।

(नेहा उस लड़के को अन्दर लेकर जाती है जहां संध्या बैठी हुई है, लड़का संध्या को एक नजर ही देखता है और मुग्ध हो जाता है, फिर नेहा से बातें करता है।)

लड़का–साली जी! आप की दीदी तो अप्सरा हैं या फिर किसी गालिब की गज़ल है।

नेहा–ये बात आप खुद सें ही न पूंछ लीजिए जीजा.... जी।

लड़का–अब हम क्या पूछें साली जी, इनके चेहरे की चमक और भोलेपन ये साफ बता रहे हैं कि आपकी दीदी तो अप्सरा से कम नहीं हैं।

नेहा–पर जीजा जी हम आप को एक बात और बता देना चाहते हैं कि मेरी दीदी अपंग हैं।

लड़का–पर यह मुझे पहले क्यों नहीं बताया गया।

नेहा–पर अब मैं बता रही हूं जीजा जी।

(लड़का और उसके साथ के सभी लोग चले जाते हैं। संध्या को नेहा सीने से लगा कर खूब हंसती है।)

नेहा–वाह! दीदी वाह, तुमने तो कमाल कर दिया, पहली ही नजर में तीर जिगर के पार कर दिया।

संध्या–अब चुप भी रहेगी।

(इतने में मां आ जाती है)

शकुन्तला देवी–नेहा तेरी ये आदत मुझे बिल्कुल नहीं अच्छी लगती, जरूरत क्या थी इस अपाहिज को दिखाने की।

नेहा–मां अगर शादी होगी पहले दीदी की वरना इस घर में कोई भी शादी नहीं होगी

(दूसरे दिन संध्या को लेकर नेहा जयपुर पहुच जाती है और उसे नकली पाँव लगवाकर वापस आती है। अब तो उसे कोई अपंग नहीं कह सकता, अब संध्या कभी डांस के लिए दिल्ली, बम्बई तो कभी कोलकाता, मद्रास या फिर बंगलौर तक सफर करने लगी है। नाम, इज्जत, पैसा सबकुछ उसके पास होने के बाद भी उसके अन्दर जरा सा घमण्ड नहीं है। चारों तरफ उसके नाम की पोस्टरों से दिवार भरी पड़ी है। जिस संध्या को उसकी सौतेली मां हर वक्त कोसती रहती थी, आज उसे अपनी मॉ से मिलने के लिए वक्त नहीं है। उसकी मां का वह कोसना, वह श्रॉप उसके लिए आशीर्वाद साबित हुआ और वही सौतेली मां अपनी अमीर बेटी के लिए तड़प रही है उसका तो बोल–चाल का ढ़ंग ही बदल गया। संध्या को खुद भी बहुत ताज्जुब हो रहा है कि उसके मां के अन्दर एकाएक इतना प्यार और बदलाव कैसे आया। संध्या अपने पैसे से एक अच्छा सा बंगला खरीदती है और फिर अपने पूरे कुटुम्ब को वहां शिफ्ट करती है।

0 क्या संध्या ने शादी की।

0 क्या संध्या अपनी सौतेली मां को माफ करती है।

जानने के`लिए पढ़िए अगले अंक में।

प्रो0 एम.एन.अकेला ☎:413926

सम्राट टेलर्स

(सुट एवं सफारी के विशेषज्ञ)

पता : 50, कोठापार्चा, डॉट के पुल के बगल में, इलाहाबाद–3

क्या जमाना आ गया है दोस्तों?

आलिंगन करके सदा सदा के लिए सो गए प्रेमी–प्रमिका

शास्त्रीनगर, कानपुर का रहने वाला युवक लक्की–22 तथा अपने साथ भगाकर लायी गयी लड़की सोनी–20 सहसपुर क्षेत्र में धूलकोट स्थित तिब्बती कालोनी के समीप बेहोशी की हालत में एक दूसरे से आलिंगन हुए पाये गये। अभी इन दोनों की शादी की कस्में खाये आठ दस भी नहीं हुए थे।

अब बफादार नहीं रह गई बीवियां

ब्राजील की शादीशुदा औरतों ने पति से बेवफाई करने में इतनी तरक्की कर ली है कि यहां के ज्यादातर पति अपनी पत्नी को शक की नजर से देखने लगे हैं।

ब्राजील में करवाए गए सर्वे के मुताबिक पांच में से सिर्फ एक पति ऐसा है जिसे थोड़ी बहुत यह उम्मीद है कि उसकी बीवी बेवफा नहीं है, बाकी चार को तो यह पक्का यकीन है कि उसकी बीवी के दूसरे मर्दो से संबंध हैं।

पति को छोड़ बहनोई का दामन थामा

दिन–रात मेहनत करके एक युवक ने पत्नी की हर इच्छा पूरी करने की कोशिश की, लेकिन विवाहिता ने पति का साथ छोड़कर बहनोई का दामन थाम लिया। यही नहीं उस महिला को अपनी साल भर की जुड़वा बच्चियों पर भी दया नहीं आई। दोनों बच्चियां मां के आंचल के लिए तरस रही है। युवक जब साढ़ू के घर पत्नी को लेने गया तो उसने जान से मारने की धमकी दी।

सहयोगी भी सहयोगी न रहे

(फालोवर से छेड़खानी में सिपाही बंदी)

बहराइच, पुलिस लाइन के मेस में कार्यरत फालोवर लाली देवी ने कोतवाली में तहरीर दी है, जिसमें सिपाही राम अभिलाष पर छेड़खानी का आरोप लगाया है और कहा कि सिपाही ने उसका हाथ पकड़ कर घसीटा व जबरदस्ती करने की कोशिश की।

दहेज के लिए बारात नहीं आई

दुल्हन बनी पुष्पा के हाथों में मेंहदीं रची जा चुकी थी। सेहलियां मंगल गान और हंसी–ठिठोली कर रही थीं। पिता निर्जल व्रत रह कर दामाद का पांव पूजने के लिए दरवाजे पर बैठ गए थे। सगे–संबंधी बारातियों के स्वागत की तैयारियों में जुटे थे, लेकिन सब धरा रह गया। बारात पहुंची ही नहीं, वह भी 70 हजार रुपये के लिए। पुष्पा के पिता ने इस मामले में चार लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।

शादी के दो दिन बाद ही बीवी को कहा अलविदा

जिस लड़की से विवाह के लिए वह बेतरह बेकरार था, उसने पत्नी को अलविदा कह दिया। यों इसे कम उम्र की नासमझी भी नहीं कह सकते। वर 75 वर्ष का था। दुनिया को जांच–परख चुका था। यह बात अलग है कि दुलहन सिर्फ 23 साल की थी। रिचर्ड ग्रिफिथ व्हील चेयर पर जीवन गंजार रहा था और पिछले तीन साल से लॉरा प्राइस को शादी के लिए मनाने की कोशिश कर रहा था।

पैसे के लिए बाप को मार डालनैनी के चक इमामअली गांव में जवान बेटे ने बाप के सिर पर हॉकी से वार कर दिया और अस्पताल पहुंचने तक में उसकी मौत हो गई। परिजन इस घटना के पीछे हाल ही में बेची गई जमीन के पैसे को लेकर हुआ झगड़ा बताते है। घटना के बाद युवक फरार है।

✍ राही अलबेला

पांच मिनट में शादी हो गई

महाराष्ट्र के लोलापुर जिले के पचासों की संख्या में दवा विक्रेता एक पखवारे से नारीबारी में शकरगढ़ रोड के किनारे ठहरे हुए थे। इनमें दादा इंगोले के पुत्र नारायण इंगीले एवं श्रीमंत की पुत्री कल्पना दोनों युवा थे। अचानक उनकी शादी का मंडप सजा। मंडप मं बीच से पर्दा डाल दिया गया। एक तरफ वर और दूसरी तरफ कन्या पर्दे के एक छोर पर पंडित बैठ गए वर एवं कन्या दोनों पर्दे के पीछे से एक दूसरे के उपर चावल डाले और पांच मिनट में शादी हो गई।

क्या जरुरत है यह भी पहनने की

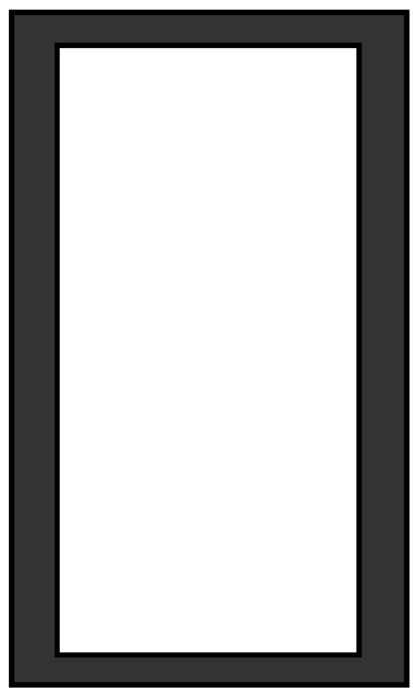

सिडनी के आइसबर्ग स्विमिंग क्लब में फैशन परेड के दौरान एक मॉडल

कहानी

हवस की शिकार

नौलाख अहमद सिद्दीकी

एक वहसी दरिन्दे ने एक पल में नन्हीं की जिन्दगी से खिलवाड़ कर उसके पांच बरस के सपने को चकना चूर कर दिया। अब वह न समाज की रही न ससुराल की। महज दस बरस की थी मां–बाप शादी कर दिये। अभी वह ससुराल का मुॅह भी नहीं देख पायी थी कि ससुराल वालों ने दुत्कार दिया। अब उसके आंखों में सिवा आंसू के कुछ नहीं बचा। सब कुछ लुट गया।

जमुनापार के बारा क्षेत्र में सपेरों के लगभग पांच सौ घरों की एक बस्ती है। जहॉ अधिकतर लोग गांव–गांव टहलकर सांप व वीन बजाकर अपना जीवन चलाते है। वही कुछ मेहनत मजदूरी करके। बहुत थोड़े से लोगों के पास खेती है। इनका अपना एक अलग समाज और कानून है। आज भी विरादरी के फैसले पंचायत के माध्यम से होते है।

इसी बस्ती में ओंकारनाथ का परिवार रहता है। ओंकारनाथ बूढ़ा हो चला है। इसकी पत्नी दुलारी के शरीर में हड्डियां ही बची है। ओंकार के तीन लड़के है। राजेन्द्र(40), पंजाब (35), राजकरन (22)। तीन लड़किया है शंजूं, कुसुमा और नन्हीं। ओंकार तीनों लड़के और तीनों लड़कियों की शादी कर चुका है। बड़े लड़के राजेन्द्र के 2 लड़के और एक लड़की है, दूसरे लड़के पंजाब के चार बच्चे हुए चारों की मौत हो गयी। शंजू की शादी 12 वर्ष की उम्र में ही कर दी गयी थी उसके कुल 6 बच्चे हुए दो जीवित है, दूसरी बेटी कुसुमा के अभी बच्चे नहीं है। जबकि नन्हीं ससुराल जाने को तैयार बैठी थी। वह अपनी प्रियतम कड़ेनाथ के बारे में दिन रात सपना देखा करती थी। उसका गौना भी होने वाला था।

तीन अगस्त की रात को उसके साथ जो कुछ हुआ, बहुत बुरा हुआ। शाम का वक्त थार। वह लोहगरा बाजार सब्जी लेने गयी थी। वह सब्जी लेकर लौट रही थी कि एक पल में उसके सारे सपने चकनाचुर हो गये। अभी वह गांव के बाहर सन्नाटे में थी। शाम के 7 बजे रहे थे। उसी समय गांव के राजेश कोल अपने दो साथियों के साथ सामने आकर खड़ा हो गया और नन्हीं के साथ छेड़खानी करने लगा। वह इसका विरोध किया तो राजेश उसे जकड़ लिया जब वह चिल्लाना चाही तो एक मुंह दाब लिया। नन्हीं को तीनों उठाकर एकान्त में रेलवे लाइन पार करके मैदान में ले गये। राजेश ने उसके कपड़े तार–तार कर डाले। उसके बाद नन्हीं की इज्जत से खेलता रहा। वह अपनी आवरु की भीख मांगती रही। वहसी हंसता रहा। दोनों साथी दूर खड़े उसके जिस्म को नोचते हुए देखते रहे। जब बेसुध हो गयी, हल्की सांस चलती रही तो तीनों उसे घोर अंधेरे जंगल में छोड़कर जाने लगे वह डरी हुई घर पहुंचाने की मिन्नते करती रही। इस राजेश ने उसे धमकी दिया जुबान खोला तो जिन्दगी से हाथ धो बैठेगी। पूरे परिवार को मार दूंगा। रात के 11 बजे रहे थे जब वह अकेली लूटी पिटी घर लौट रही थी। रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उसी समय दो व्यक्ति मिल गये जो ना नुकूर के बाद प्रधान के घर छोड़ने को तैयार हो गये। रात के करीब साढ़े 12 बजे वह रोती विलखती प्रधान के घर पहॅुची। प्रधान से आप बीती कही, प्रधान भले इंसान थे। घर के कोने में जाकर वह लेट गयी। उसे नींद कहां, नीद तो कोसो दूर थी, चिन्ता खाये जा रही थी। किसी प्रकार सुबह हो वह अपने घर पहुंचे। एक रात कई रात के बराबर हो गयी। सुबह की हल्की रोशनी नजर आयी। नन्हीं घर जाने को तैयार हो गयी। प्रधान ने एक आदमी के साथ घर भेजवा दिया।

इधर नन्हीं के घर न पहुंचने पर परिजन बेचैन हो गये, सभी ढूढने निकल गये। पर नन्हीं कही हो तो पता चले। थकहार कर घर लौट आये। नन्हीं की बूढ़ी मां पूरी रात सो न सकी। किसी तरह सुबह हुई। बेचैन हो फिर निकल गयी, उसे ढ़ढने एकाएक नजर ठहर गयी, आंखे पथरा गयी, दिल बैठने लगा, चारो तरफ अंधेरा सा हो गया। नन्हीं का हाल देखकर, नन्हीं लुटी–पिटी फटे कपड़े, आधा शरीर खुला सामने दिखी। उससे चला नहीं जा रहा था। मुंह से आवाज नहीं निकल पा रही थी, वह मां से आकर लिपट गयी, रो–रोकर हाल बेहाल हो रहा था। घर पर भाभियों से आप बीती सुनायी, सुनकर सब अवाक रह गयी। देन नहीं लगी नन्हीं के आने की खबर मोहल्ले में फैल गयी। सभी घर आ गये। किसी ने राय दी थाने जाने की पर दिल कांप गया, उसकी धमकी से। एक व्यक्ति ने हिम्मत जुटाई नन्हीं को लेकर थाने गया और थानेदार को सारी बात बतायी। पहले तो आनाकानी की। फिर वही पुलिसिया भाषा का इस्तेमाल किया। एक दिन–एक रात थाने में बैठाये रहे। पता नहीं क्या–क्या उट–पटांग पूछते रहे। उसके बाद दबाव पड़ने पर उस गरीब का मुकदमा लिखा गया। नन्हीं मेडिकल भेज दिया गया, उधर राजेश को हिरासत में लेकर जेल भेज दिया गया।

लेखक महिला थाना पहुंचा जहां दो दिन से नन्हीं अपनी मां दूलारी देवी के साथ मौजूद थी। दुलारी सो रही थी। पर नींद कहां, कमरे में नन्हीं सो रही थी। उसके साथ एक और दरिन्दे की लूटी हुई युवती थी। जिसकी उम्र बमुश्किल से सत्रह साल के आस–पास रही होगी। उसके साथ उसकी भाभी थी। मैंने थाने में उपस्थित दो थाना कांस्टेबिल से नन्हीं को बुलाने की बात कहीं। नन्हीं आंख मलती हुई बाहर आयी। पहले वह थोड़ा घबड़ाई लेकिन जब उसे पता चला की मैं पुलिस नहीं बल्कि खबरनीश हूँ तो वह झिझक दूर करती हुई। सिल–सिलेवर आप बीती बताई। उसका मासूम चेहरा कुछ

पल के लिए देखता रहा उसकी एक–एक बात जेंहन में उभरती चली गयी।
जब उससे शादी के बारे में पूछा कि अब तुम्हें कड़ेदिन तो व्याह कर नहीं ले जायेगा तुम क्या करोगी। इस पर उसका जबाब थ ा अभी शादी नहीं करुगी। लेकिन मां–बाप जहा कर देगे उसे मैं स्वीकार कर लूंगी। उसकी बातों से ऐसा लगा रहा था मानों वह शिक्षित घर की शिक्षित लड़की हो। उसे देख नहीं लगता था कि वह किसी सपेरे विरादी से ताल्लुकात रखती है। जहां आज भी वह रुढ़ीवादी लोग रहते है। वह मासूम एक हादसे की शिकार हुई है न कि जानबुझकर। उससे सहानुभूति होनी चाहिए न कि उसे ठुकरा देना चाहिए। बाह रे समाज, क्या नियम बनाया है। करे कोई और भरे कोई।

गीत

एक माटी का घर आग पानी हवा
जिन्दगी को भला और क्या चाहिए
यह धरा का बिछौना गगन ओढना
फूल औ शूल जैसे सहारे तो हैं
ये अमा पूर्णिमा रात भी प्रात भी
सूर्य भी चॉदनी चॉद तारे तो हैं
लूटना है तो जी भरके लूटो रतन
अब किसी को भला और क्या चाहिए
राम ने जो दिया वह सभी तो मिला
पर हमारी व्यवस्था का यह सिलसिला
एक सुख की ही कुटिया नहीं है मगर
दर्द सुख का महल है कई मंजिला
भूख औ प्यास बॉधे सफर के सिवा
आदमी को भला और क्या चाहिए
आदमी खुद ही कौडी का अब तीन है
आज सॉपों को डसने लगी बीन है
गीत को व्यर्थ अर्थी दिये जा रहा
इन मशीनों के आगे तो सब हीन है
पत्थरों के नगर चिमनियों का धुँआ
इस सदी को भला और क्या चाहिए

डॉ0 सन्त कुमार

वर्ल्ड कप फुटबाल एक नज़र

पहले विश्व कप के दूसरे मैंच में अर्जेटिंना के मोंटी के गोल के तीन मिनट बाद ही फ्रांस के मार्सेल लांगिलेर ने अकेले ही प्रयास से एक गोल कर दिया। अभी उनकी गेंद पोस्ट के अंदर गई ही थी कि ब्राजील के रेफरी अलमीदा रेगो ने गोल को अमान्य करार देते हुए मैच खत्म होने की सिटी बजा दी। इसके बाद तो हंगामा हो गया। फ्रांस ने विरोध दर्ज किया कि मैंच छह मिनट पहले ही खत्म कर दिया गया है। अर्जेटीना के समर्थकों ने मैदान पर ध ाावा बोल दिया। इस बीच रेगो ने लांइसमेन से मशविरे के बाद गलती मान ली और बाकी बचे मैंच के लिए खिलाड़ियों को मैदान में बुलवाया। इस पूरे घटनाक्रम से अनभिज्ञ कुछ खिलाड़ी तब बाथरुम में थे। खैर, मैच हुआ और अर्जेटीना अंत तक अपनी बढ़त बनाए रखने में सफल रहा।

कुछ खास बाते

1. विश्व कप में सबसे ज्यादा मैच खेलने का रिकॉर्ड जर्मनी के लोथर मथायस के नाम है। उन्होंने पांच विश्व कप प्रतियोगिताओं (1982 से 1998 तक) में देश का प्रतिनिधित्व किया और कुल 25 मैच खेले। अंतोनियों कार्बाजल ने भी पांच विश्व कप (1958 से 1966 तक) में मैक्सिकों का प्रतिनिधित्व किया । लेकिन वह मथायस के जितने मैंच नहीं खेल सके। सबसे ज्यादा मैंच खेलने वालों की सूची में दूसरे स्थान पर तीन खिलाड़ी हैं।
2. सभी खिलाड़ियों की जर्सी पर नंबर लिखने की परंपरा 1954 में शुरु हुई।

क्या किया आपने भविष्य के लिए

जिंदगी की भागदौड़ में तिवारी जी को यह पता ही नहीं चला कि वह 50 वर्ष के हो गए हैं। जवानी में कमाए पैसों को उन्होनें मौज–मस्ती में फूंक डाला। अब तेरह वर्षो बाद रिटायर हो जायेंगे। उन्हें बुढ़ापे का नजदीक आता देख यह भय सताने लगा कि भविष्य के लिए कुछ हमनें किया ही नहीं कैसे कटेगा बुढ़ापा? जाहिर है यह समस्या सिर्फ तिवारी जी की नहीं बल्कि देश के लाखों लोंगो के साथ भी यही समस्या है। मगर, घबराइये नहीं। अभी भी कुछ खास नहीं बिगड़ा है। थोड़ी सी प्लानिंग और दृढ़निश्चय से आप अपने बुढ़ापे के लिए अच्छी राशि की व्यवस्था कर सकते है।

इस उम्र पर पहुंचने के बाद आदमी को ऐसे माध्यम में निवेश करना चाहिए जिनमें ज्यादा से ज्यादा आयकर बचत का लाभ मिले। दरअसल इस उम्र तक पहुंचते–पहुंचते आदमी का वेतन काफी अधिक हो जाता है और उस पर कर दायित्व बढ़ता जाता है। लिहाजा बेहतर विकल्प में निवेश कर जहां कर की बचत होगी, वहीं रिटायरमेंट के समय एकमुश्त पैसा भी हाथ में आ जाएगा। इए उम्र के लोगों के लिए जी.ओ.आई रिलीफ बांड और एल.आई.सी. की बीमा निवेश सबसे अच्छी स्कीम है। इनके अलावा आईसीआईसीआई और आईडीबीआई के कर बचत वालें बांड, एनएससी और पीपीएफ भी कर बचत में खासा योगदान देते है। यदि आपने जवानी में कुछ निवेश किये थे, तो वह भी इस उम्र तक परिपक्व हो जाते है। लेकिन सामान्य निवेश के साथ–साथ आप मेडिकल सुविधा से जुड़े माध्यमों में भी खासा निवेश करें, जिससे बुढ़ापे में दुर्भाग्य से यदि आप किसी गंभीर बीमारी की चपेट में आ गए, तो कम से कम पैसों की चिंता तो नहीं रहेगी।

दरअसल आमतौर पर सरकारी नौकरी में ही पेंशन की सुविधा मिलती है। लिहाजा यदि आप किसी निजी कंपनी में काम कर रहे है, तो इस तरह का निवेश किया जाना चाहिए कि रिटायरमेंट के बाद आपको अपने निवेश से हर माह पेंशन के रुप में एकमुश्त राशि मिलती रहे। इसलिए यदि आपनें पेंशन स्कीमों में खासा निवेश नहीं किया है, तो रिटायरमेंट के बाद आपको ठीक–ठाक राशि हाथ नहीं लगेगी और पहले की तरह जीवन का स्तर बनाए रखने में काफी मुश्किले आएगी। पेंशन उत्पादोंमेंएलआईसी जीवन सुरक्षा प्लान, आईसीआईसीआई, प्रू फोरएवर लाइफ पेंशन प्लान, एचडीएफसी लाइफ पर्सनल पेंशन प्लान अच्छी स्कीमें है।

क्या जरुरत है कपड़े की कपड़े बहुत मंहगे हो गये है

मिस कोलंबिया 2002 वेनेसा मैंडोजा सान जुआन में समुन्द्र तट पर सुस्ताते हुएं।

समाज

अकेली नारी का अस्तित्व

● श्रीमती मोना द्विवेदी

अभी तक कुवारी है जरूर कोई बात रही होगी, इसीलिए शादी नही कर रही है। ब्रेकअप हो गया, कोई शारीरिक खामी होगी, किसी ने धोखा दिया होगा। कुछ बॉयोलाजिकल जरूरतें भी तो होती हैं। उन्हे कैसे पूरी करती होगी। ऐसी तमाम बातें एक उम्र के बाद शादी न करने पर लड़कियों को सुनने को मिलती हैं। इन तमाम शंकाओं और अफवाहों को खारिज करते हुए आज के जमाने में कहा जा सकता है कि शादी नहीं करने का निर्णय लेने वाली 90 फीसदी लड़कियों के मामले में दो मजबूत आधार काम करते हैं। पहला है आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और दूसरा निर्णय लेने की छूट।

गीता सरकारी नौकरी में हैं। अच्छी–खासी तनख्वाह, खुद का फ्लैट है और देखने में आकर्षक हैं। 33 साल की उम्र तक उन्होंने घरवालों को अपने लिए वर तलाशने की छूट दे रखी थी। शादी को लेकर उनकी भी कुछ ख्वाहिशें थीं कि लड़का उनके मेल का हो। अच्छी नौकरी करता में हो और दहेज की मांग न करे। पहली दोनों बातें तो ठीक रहीं, पर तीसरी शर्त सुयोग्य वर वाले पचा नहीं पाये। जो दहेज नहीं मांगते, वे बेमेल थे। अखबार में विज्ञापन भी निकलवाया लेकिन सूटेबल युवक न मिल सका।

गीता बताती हैं कि कभी–कभी तो वितृष्णा सी हो जाती है। ज्यादातर लड़के अब भी मेरी कमाई या घर देखकर मुझसे शादी करने को तैयार नजर आते हैं। पर खुद वे कहीं स्टैंड नहीं करते, किसी पोजीशन में नहीं हैं। उनकी मानसिकता रहती है कि बैठे–बिठाये सब कुछ मिल जाएगा। फिर ऐश तो कहीं भी कर लेंगे। एक खास उम्र के बाद मेरी ही शादी के प्रति रुचि खत्म हो गयी। खैर खुद को सही ढ़ंग से प्रस्तुत करने और लोगों को सीमा में रहने का सबक सिखाने में बहुत सावधान रहना पड़ता है।

दीपा की सच्चाई इन सबसे अलग है। उसने भी किसी से प्यार किया था। वह भी शादी करके खुशहाल गृहस्थी बसाना चाहती थीं, लेकिन उनके घरवालों ने ऐसा नहीं करने दिया। 16–17 साल की रही होगी तो पिता को पक्षाघात हो गया। वे कुछ भी करने के लायक नही रह गए। प्राइवेट नौकरी थी और घर में दीपा सबसे बड़ी संतान थी। तब पिता के दफ्तर में क्लर्क की नौकरी मिल गयी। साथ में पढ़ाई भी चलती रही और 24 साल की उम्र में एक अच्छी कंपनी में पीआरओ की जॉब मिल गई। इसी दौरान उसकी मुलाकात एक ईरानी लड़के से हुई। उनका कोर्टशिप तकरीबन तीन साल चला। वह घर में आता–जाता था, सबके लिए गिफ्ट भी लाता था। दीपा के साथ वह अपना घर बसाना चाहता था। घर में और दो बहनें थीं, 23 और 20 साल की । दीपा ने जब इस संबंध में अपने घर में बात की, तो घर में भूचाल आ गया। मां ने कहा कि मैंने तो समझा था कि वो तुम्हें बहन मानता है, मुझे मम्मी कहता था। इसके बाद दीपा को घर में बंद कर दिया गया। बहनों ने भी ताना दिया कि तुम्हें हमारे भविष्य की चिंता नहीं।

दीपा कहती है कि मैं उग्र और जिद्दी हो जाती, शायद मैं उसके साथ भाग भी जाती, लेकिन पिता की बेचारगी के आगे खामोश रह गई, पर मैं उसे भुला न सकी। डेढ़ साल बाद उस ईरानी लड़के ने अपनी इंडियन मंगेतर की फोटो भेजकर पूछा कि कैसी हैं। मैंने जवाब दिया, बहुत अच्छी। जल्दी शादी कर लो। एक महीने बाद उनकी शादी हो गई। अब वे अच्छी तरह सेटल हैं। तब तक मेरी उम्र तीस से ज्यादा हो गयी थी। बाद में एक और युवक पर विश्वास किया, पर जब उससे शादी की बात की तो वह मुकर गया। इस बीच पिताजी गुजर चुके थे। दोनों बहनों की भी शादी हो चुकी थी, लेकिन मां को मुझे लेकर कोई चिंता, दुख या अपराध–बोध नहीं था। मेरी भी शादी की बात चली, लेकिन दुर्भाग्य से कहीं बात नहीं बनी । फिर तो मैंने चिंता ही छोंड़ दी। फ्रेंड्स बनाने शुरू कर दिये। एक महानगर में बहुत अच्छी पोस्ट पर मेंरी नौकरी भी लग गयी। पर कुछ सालों में ही थक गई कि यह मैं क्या कर रही हूं। मेरा भविष्य क्या है? खुद को शांत किया, ध्यान और योग करने लगी। अब लाइफ अच्छी गुजर रही है। एक लड़की गोद लूंगी और उसे वे सारी खुशियां दूंगी जो मुझे नहीं मिल सकीं।

मधु के शादी न करने के निर्णय के पीछे ऐसी कोई दर्दनाक सच्चाई नहीं है। शुरू से ही उसके मन में था कि वह शादी नहीं करेगी। वह घर में सबसे छोटी है। माता–पिता की संपत्ति में उसका हिस्सा है। रशियन एंबेसी में सीनियर ट्रांसलेटर है। अपना घर है और सारी सुख–सुविधाएं है। मधु ने शुरू में ही शादी न करने का निर्णय कर लिया

अब आगे क्या पोज देंगी, आप लोग?

था, सो अंत तक उसी बात पर अड़ी रही। जो भी उसका हितैशी बनता, शादी करने के लिए समझाता। तब वह कहती कि भाई, मैं कहां से परेशान या दुखी नजर आती हूं, जो आप लोगों को मेरी इतनी चिंता है। जब वह विवाहितों को परेशान देखती हैं, तो सोंचती हैं कि वह उन सबसे अच्छी पोजीशन में हैं। हां, मधु मिजाज से फेमिनिस्ट भी नहीं है। हमने इस विषय पर 34 वर्ष से ऊपर की कई अविवाहित कामकाजी लड़कियों से बातचीत की। ज्यादातर मामलों में विवाह न होने की वजह दहेज देने की असमर्थता के कारण योग्य वर कर न मिलना ही है। जबकि वे शादी के लिए इच्छुक थीं। ये ज्यादातर मध्यमवर्गीय लड़कियां हैं।ये लड़कियां शादी के नाम पर किसी से भी शादी करके खुद को अपमानित नहीं करना चाहतीं, क्योंकि हमारे समाज की मानसिकता यही है कि वर को कम से कम कमाने और नौकरी के मामले में दुलहन से ऊंचा होना चाहिए। कुछ ऐसे मामले मिले, जिनसे लड़कियों की शादी की चिंता करने वाला ही कोई नहीं था।

उपरोक्त घटनाओं पर नजर डालने पर यह आभास मिलता है कुछ घटनाएं तो दहेज के कारण होती है तो कुछ मजबुरी बस। लेकिन भारतीय सभ्यता के पुरुष प्रधान समाज में नारी का अस्तित्व अकेले किसी भी दृष्टिकोण से सम्भव प्रतीत नहीं होता। लेकिन ऐसा नही है कि अकेले नहीं रहा जा सकता है। मगर यह निर्णय लेना नाकों चने चबाने के बराबर होगा।

बच्चा गोद लेने सम्बन्धी कानून

ज्ञानेन्द्र सिंह,
एडवोकेट, हाईकोर्ट

पुरानी हिन्दू विधि में एक महिला को अपने पति के जीवित रहते गोद लेने का अधिकार ही नहीं था, बिना उसकी सहमति के। उसके पश्चात् वह पति का बच्चा ही माना जाता था। पत्नी तो केवल एजेंट कहलाती थी, किन्तु 1956 में हिन्दू दत्तक एवं भरण–पोषण अधिनियम बनने के बाद कानून मुं परिवर्तन हो गया। इस अधिनियम के लागू होने के बाद एक हिन्दू स्त्री भी स्वयं के लिए बच्चा गोद ले सकती है, लेकिन उसके लिए कुछ शर्तें हैं।

धारा 8 हिन्दू दत्तक एवं भरण–पोषण अधिनियम के तहत वह स्त्री ही बच्चे को गोद ले सकती है जो स्वस्थचित, अविवाहित, लेकिन वयस्क हो। यदि वह विवाहित है, लेकिन उसका विवाह भंग हो चुका हो या उसके पति की मृत्यु हो गई हो या उसके पति ने धर्म परिर्वतन कर लिया हो या सक्षम क्षेत्राधिकार वाले न्यायालय ने उसके पति को विकृत चित्त घोषित कर दिया हो।

(1) यदि अविवाहिता है– यदि किसी स्त्री ने अठारह वर्ष की उम्र पूर्ण कर ली है, लेकिन विवाह नहीं किया है, तो वह स्त्री स्वयं के लिए बच्चा गोद ले सकती है। गोद लेने के पश्चात् यदि वह स्त्री विवाह कर लेती है, तो उसका पति उस बच्चे का सौतेला पिता ही होगा। यह महत्वपूर्ण अधिकार इस अधिनियम की देन है, जबकि पुराने हिन्दू कानून में एक अविवाहित स्त्री को गोद लेने का अधिकार ही नहीं था।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने 1972 में एक फैसला दिया थ कि यदि अविवाहिता लड़की मां बन जाती है, तो वह साहै, तो वह बच्चा अधर्मज माना आएगा, जबकि अविवाहिता लड़की के द्वारा गोद लिया बच्चा धर्मज माना जाएगा।

(2) यदि वह विवाहिता है–

(1) यदि उसका विवाह भंग हो गया होः वह स्त्री जिसका विवाह कानूनन भंग हो चुका हो अर्थात् उसका तलाक हो गया हो तब वह औरत स्वयं के लिए बच्चा गोद ले सकती है। ऐसे मामले में पति का गोद लिए बच्चे से कोई संबंध नहीं होगा। विवाह भंग होने के पश्चात यदि औरत बच्चे को गोद लेती है, तत्पश्चात् वह विवाह कर लेती है, तो उसके पति के संबंध गोद आए बच्चे से सौतेले पिता जैसे होंगे।

(3) यदि पति की मृत्यु हो जाती हैः पुराने कानून के अन्तर्गत एक विधवा मृत पति के आधार पर या उसके उत्तराधिकारियों की सहमति से ही बच्चे को गोद ले सकती थी, लेकिन अब वह स्वयं के लिए बच्चे को गोद ले सकती है।

इन मामलों में मृत पति बच्चे का गोद वाला पिता होगा। यदि वह विधवा होने के पश्चात् बच्चा गोद लेती है, तत्पश्चात् पुनर्विवाह कर लेती है, तो पति की स्थिति गोद आए बच्चे के लिए सौतेले पिता की होगी।

(4) यदि पति ने पूर्ण रूप से संसार का त्याग कर दिया होः यदि पति ने गृहस्थ आश्रम छोंड़कर संन्यास ग्रहण कर लिया हो, तब ऐसी स्थिति में उसकी पत्नी स्वयं के लिए बच्चे को गोद ले सकती है।

(5)यदि उसका पति हिन्दू नहीं रहा होः यदि पति अपना धर्म परिवर्तन कर ले अर्थात् हिन्दू नहीं रहा हो, तो उसकी पत्नी को बच्चा गोद लेने का अधिकार है।

(6) यदि पति विकृत–चित्त हो गया होः यदि सक्षम न्यायालय ने पति को विकृत–चित्त घोषित कर दिया है, तो वह पत्नी स्वयं के लिए बच्चा गोद ले सकती है। एक मामले में एक औरत का पति पागल था। उसकी पत्नी ने बच्चा गोद ले लिया और गोद पक्ष को किसी ने चुनौती नहीं दी, तो वह गोद सही माना जाएगा। इस प्रकार इस अधिनियम के पारित होने के बाद एक हिन्दू स्त्री चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित, अपने लिए लड़का अथवा लड़की गोद लेने के लिए पूर्ण रूप से सक्षम है।

एक व्यक्तित्व

बहुत निर्भिक शायर थे: अकबर इलाहाबादी

अकबर इलाहाबादी युग प्रवर्तक शायर थे। उन्होंने ब्रिटिश कालीन भारत में राजनीतिक हलचल को अपनी पैनी निगाहों से देखा था। सरकारी अधिकारी होने की बंदिश के बाद भी उन्होंने जो लिखा वह किसी अन्य शायर के लिये असंभव था।

सैयद अकबर हुसैन 'अकबर इलाहाबादी' का जन्म 16 नवम्बर, 1846 को बारा गाँव में हुआ था। उनके पुरखे नैशापुर (ईरान) से आये थे। उनके परदादा सेना में सूबेदार थे। उनके पितामह सैयद फजल महमूद बहुत बड़े विद्वान थे। उनको अवध के नवाब आसफुद्दौला ने जागीर दी थी। 'अकबर इलाहाबादी' के पिता सैयद तफज्जुल हुसैन नायब तहसीलदार थे। उनका निधन 1888 में हुआ। उनकी माता बिहार के गया जिले की थीं। अकबर की आरम्भिक शिक्षा इलाहाबाद के जमुना मिशन स्कूल में हुई। 1849 में उन्होंने स्कूल छोड़ दिया। उन्हें लिखने–पढ़ने का बचपन से शौक था। उन्होंने अपने आप अंग्रेजी लिखने, पढ़ने, बोलने की योग्यता प्राप्त की।

अकबर नौकरी की तलाश में काफी भटके। गऊघाट पुल के निर्माण के समय वे पत्थरों की नाप–जोख के मुंशी रहे। कुछ दिन उन्होंने रेलवे के माल गोदाम में भी काम किया। उन्होंने कुछ दिन कचहरी में भी काम किया था। कहा जाता है कि वे उम्मीदवारों में सबसे छोटे थे। उनकी छोटे कागज पर लिखी अर्जी दूसरे कागजों के साथ कहीं गुम हो गयी तो अगले दिन वे कहुत बड़े कागज पर लिखी अर्जी लिख कर लाये। उन्हें बाद में नकलनवीस की नौकरी मिल गयी। यह नौकरी भी उन्होंने जल्दी ही छोड़ दी। 1869 में वे नायब तहसीलदार हुए। उन्होंने इससे इस्तीफा देकर बाद में हाईकोर्ट में 'मिसिलख्वाँ' के पद पर काम किया। 1873 में वकालत की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने सात साल तक इलाहाबाद, गोरखपुर, आगरा तथा गोंडा में वकालत भी की। 1880 में वे मुंसिफ हो गये। तरक्की पाते–पाते वे जिला जज के पद तक पहुँच गये। जस्टिस ऐकमन के रिटायर होने पर उनका हाईकोर्ट में जज होना भी तय था किन्तु तभी उनकी आँखों की रोशनी कम होने लगी और इसलिये वे समय से पहले पेंशन लेकर कोतवाली के पीछे अपनी आलीशान कोठी इशरत मुजिल में चले गये। उनका 9 सितम्बर, 1921 को 75 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनके एकमात्र बचे पुत्र इशरत हुसैन न्यायिक सेवा में जिला जज होकर रिटायर हुए। उनका निधन 1940 के लगभग हुआ। अकबर इलाहाबादी को खुसरो बाग के पास कालाडाँड कब्रिस्तान में दफनाया गयाथा। उनके दो पौत्रा अकील और मुस्लिम पाकिस्तान चले गये थे। 'कुल्लियाते अकबर' अकबर इलाहाबादी के जीवन काल मे तीन खंडों में प्रकाशित हुआ था। चौथा खंड कराची से 1946 में प्रकाशित हुआ। उन पर अनेक किताबें लिखी गयीं जिनमें सैयद तालिब अली, पारस नाथ सिन्हा, सैयद एजाज हुसैन तथा रघुराज किशोर 'वतन' की किताबें प्रमुख हैं।

'अकबर इलाहाबादी' पर संकीर्ण तथा प्रतिक्रियावादी होने के आरोप लगे जो सही नहीं थे। उन्होंने बड़ी से बड़ी राजनीतिक हस्तियों तथा सामाजिक व्यवस्था पर चोट की। उनके कुछ शेर उल्लेखनीय हैं :–

मजहबी बहस मैंने की ही नहीं, फालतू अक्ल मुझमें थी ही नहीं।
है यही बेहतर अलीगढ़ जाके सैयद से कहूँ मुझसे चंदा लीजिये, मुझको मुसलमां कीजिये।
हो मुबारक हुजूर को गांधी, ऐसे दुश्मन नसीब हैं किसको,
कि पिटें खूब और सर न उठायें, ओर खिसक जायें जब कहें खिसको।।
इंकलाब आया, नई दुनिया, नया हंगामा है,
शाहनामा हो चुका अब वक्ते गांधीनामा है।

दुनिया न अब दुरूस्त है कायम न दीन है,
जर की तलब से शेख भी कौड़ी का तीन है।
फरमा गये हैं ये खूब भाई घूरन,
दुनिया रोटी है और मजहब चूरन।
चोर के भाई गिरहकट तो सुना करते थे,
अब ये सुनते हैं एडीटर के बिरादर लीडर।
जहाँ तुम्हारे दर्शन हों वहीं धूनी रमाऊँगा,
इलाहाबाद का कैदी न पाबन्दे बनारस हूँ।
यह गलत है कि मुल्कू इस्लाम है हिन्द
यह झूठ कि मुल्के लक्ष्मन–ओ–राम है हिन्द।
हब सब हैं मुती ओ खैरख्वाहे इंग्लिश,
योरप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द।

1903 में अपने प्रिय बेटे हाशिम के निधन के बाद अकबर बुझे–बुझे से रहते थे। किन्तु मजाक उनकी प्रकृति बन गया था। 1920 के लगभग उन्होंने म्योर सेन्ट्रल कालेज के अरबी, फारसी के प्रोफेसर नासिरी को अपने घर दावत दी। प्रो0 नासिरी ने दावतनामें के जवाब में कहलाया कि मुझे पेचिश है इसलिए मैं नहीं आ सकूँगा। अकबर ने कहलाया– आप कुछ तो खायेंगे ही, मेरे घर पर खाइये। मैं आपके ही मजाक (रुचि) के लोगों को बुलवा लूँगा। शाम को जब प्रो0 नासिरी उनके घर पहुँचे तो देखा कि वहाँ तरह–तरह के लोग मौजूद थे। उनकी हैरानी को देखकर अकबर ने हँसते हुए कहा – ये सब आपकी बिरादरी के लोग हैं दावत में शरीक होंगे। मैंने शहर के तमाम हकीमों से दरियाफ्त करके पेचिश की शिकायत वालों को एकत्र किया है। ये हर मामले में आपका साथ देंगे। प्रो0 नासिरी भी तब हंसने को मजबूर थे।

स्नेह बच्चों की दुनिया

पिनकोड क्यों

भारतीय डाक विभाग ने डाक पत्रों को गति देने एवं गंतव्य पर पहुंचाने के लिए समय–समय पर विभिन्न विधियों का प्रयोग किया है। उनमें से एक विधि पिन कोड है। भारतीय डाक विभाग ने इसे 15 अगस्त 1972 को अपनाया था। अब यह लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। 'पिन' शब्द अंग्रेजी के तीन अक्षरों 'पी.आई.एन.' से मिलकर बना है। इसका विस्तृत रुप 'पोस्टल इंडैक्स नंबर' है।

'पिन' कोड में छह अंक होते है। इन अंको का अपना अलग अर्थ है। इस हेतु देश आठ भागों में विभक्त है। इन भागों को 'जोन' कहते है। पिन कोड का पहला अंक इन्हीं जोनों को प्रदर्शित करता है। दूसरा अंक रीजन या क्षेत्र दर्शाता है। एक रीजन कई डाक छटाई जिलों में बंटा है। तीसरा अंक इन्हीं जिलों को प्रदत्त है। चौथा अंक डाक रुट के लिए प्रयुक्त है। अंतिम दो अंक किसी डाक रुप पर स्थित डाकघर को प्रदर्शित करते है।

पिनकोड के अंकों को लिखने के लिए पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, और लिफाफे पर वृत्ताकार या वर्गाकार छः खंड बने होते है। पिन कोड लिखे पत्र शीघ्र और सुरक्षित ठिकाने पर पहुंचते है। पिन कोड लिखने से एक सुविधा और भी है। पते में प्रदेश, जिला और डाकघर का नाम लिखने से मुक्ति मिल जाती है।

पिन कोड के महत्व को प्रतिपादित करने तथा उसके प्रचार–प्रसार के लिए डाक विभाग ने 14 अक्टूबर 1989 को एक डाक टिकट जारी किया था। तीन रंगों में छपे इस आकर्षक टिकट पर डाक वाहक कबूतर चित्रित है। कबूतर गतिशीलता का प्रतीक है। पिन कोड में यही भावना निहित है।

क्या आप जानते है

1. विश्व में सबसे अधिक साइकिलों का इस्तेमाल चीन में होता है। वहां इनकी संख्या 20 करोड़ से भी अधिक है।
2. हमारी आंखे 450 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दिमाग को खबर पहुंचाती है।
3. एक सामान्य व्यक्ति को सोने में लगभग सात मिनट का समय लगता है।
4. भारत में रविवार की छुट्टी सन् 1943 में शुरु हुई
5. कम खाने की तुलना में कम सोने से मनुष्य की मृत्यु कहीं जल्दी होती है।
6. रिक्शा का आविष्कार एक अमरीकी बेरिष्ट मिनिस्टर द्वारा सन् 1988 में जापान में किया गया था।
7. रोज खाया जाने वाला नमक सोडियम व क्लोरिन दो अखाद्यों से बना है।
8. जो आपका जन्म दिन है, वही दुनिया के एक करोड़ से अधिक लोंगों का जन्म दिन होता है।
9. मनुष्य के शरीर में इतना फास्फोरस होता है उससे माचिस की 220 तीलियां बनाई जा सकती है।

आवश्यक सूचना आंमत्रित है

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में लिखें।

आपका जबाब

आपका जबाब, कालम के अर्न्तगत आप अपने विचार हमें लिखना न भूलें। आपके विचार ही हमारी धरोधर व पूंजी है। आप न केवल पत्रिका की अच्छाईया बल्कि बुराईया भी लिखंकर भेंजे। हम आपके द्वारा पत्रों का cgq ghcs cbl` इंतजार करते रहते है। आपके पत्र हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

आप हमें निम्न पते पर लिखें–

आपका जबाब
मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज'
नितीन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया,
नैनी, इलाहाबाद–8

स्नेंहागन कला केन्द्र

(गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी द्वारा संचालित)

0सिलाई 0कढाई 0पेटिंग 0अन्य प्रोफेशनल कोर्सेस
0 इंग्लिश स्पोकेन (फ्री कम्प्यूटर एजुकेशन के साथ)

सम्पर्क समय : प्रात : 9 से 12बजे तक सायं : 3 से 7 बजे तक
सम्पर्क स्थलः एम0टेक0 कम्प्यूटर एजुकेशन, कौशाम्बी रोड,
(ग्राम प्रधान की मकान) धुस्सा, इलाहाबाद

आवश्यक सूचना–

प्रिय पाठकों, आपकी पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** में ''स्नेहिल जायका'' नामक नया स्थायी स्तंभ की शुरूआत करने जा रहे हैं। जो कि उन महिलाओं के लिए खास होगा जो तरह–तरह की रेसिपी बनाने में निपुण है। इसके लिए आप पाठक गण अपनी–अपनी रेसिपी लिखकर भेज सकते है। जिसे हम अपनी पत्रिका में छापकर प्रदेश के अलग–अलग कोने तक पहुँचायेंगे और अधिक से अधिक लोग आपकी रेसिपी को पढकर उसका लाभ उठा सकेंगे।

स्वास्थ्य चर्चा

अच्छी नींद से स्मरण शक्ति बढ़ती है

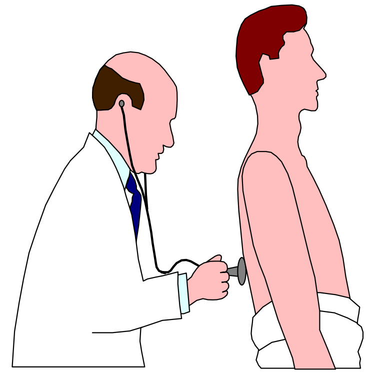

मनुष्य के मस्तिष्क के सर्वांगीण विकास हेतु नींद की भूमिका महत्वपूर्ण है। हमारे दिमाग के ऊतकों की संधियों में परिवर्तन नींद के माध्यम से ही होता है। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के अनुसंधान कर्ताओं ने प्रयोगों के आधार पर यह तथ्य प्रस्तुत किया है। शोधकर्ता मार्कोस जी फ्रैंक और माइकल पी.0 स्ट्रायकर के अनुसार सन्याविक कोशिकाओं के मध्य संधियों में परिवर्तन की क्षमता ही मस्तिष्क के विकास का आधार है। वैज्ञानिकों ने पाया कि विकास की प्रक्रिया के सर्वाधिक उत्तरदायी कारक मस्तिष्क की कोशिकाओं में मौजूद लोच या कमनीयता से अपने व्यवहार पर नियंत्रण और याददाश्त तथा किसी नई बात को सीखने का गुण घटता या बढ़ता जाता है। किसी घटना या सूचना अथवा वातावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप स्नायु उत्तेजित होते हैं तो उस समय दिमाग में कमनीयता पैदा होती है। दिमाग में कमनीयता पैदा होती है। बिल्लियों पर किए गए अध्ययन से यह बात सामने आई कि वातावरण में परिवर्तन के बाद उन्हें 6 घंटे सोने देने पर जागी हुई बिल्लियों के मुकाबले मस्तिष्कगत परिवर्तन दो गुने पाए गए।

स्ट्रायकर के अनुसार शोध के दौरान इस बात के ठोस प्रमाण मिले कि शयन जागृतावस्था के प्रभावों को सुदृढ़ बनाने और कोशिकाओं की कमनीयता बढ़ाने में सहायक होती हैं। उनके अनुसार नींद से याददाश्त पक्की होती है तथा उसमें वृद्धि होती है। नींद बच्चों के मस्तिष्क के विकासु हेतु अनिर्वाय होने के साथ–साथ वयस्कों व प्रौढ़ व्यक्तियों के दिमाग में लोच बनाए रखने के लिहाज से भी अहम भूमिका निभाती है। यह अध्ययन परीक्षाओं जैसे चुनौती भरे कार्यों की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मस्तिष्क की कमनीयता या नम्यता के निधारण में आंखों के तेजी से संचालन में ठहराव के बाद गहरी और शांत और व्यवधान विहीन शयन की भूमिका ही मुख्य है, क्योंकि उसी के कारण मस्तिष्क में गहरी अथवा उघली तरंगे उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति जैसे ही निद्रावस्था में जाता है, वैसे ही नींद उसे घेर लेती है और वयस्क मनुष्यों व पशुओं में निद्रावस्था का आधा भाग ऐसी ही नींद का होता है। इसके पश्चात जो नींद उसका स्थान लेती है, वह स्वप्न युक्त नींद होती है। इस नींद के दौरान आंखों के तेजी से संचालन के साथ–साथ मस्तिष्क में तीव्र परिवर्तन वाली तरंगें भी उठती हैं। इस शोधा के अनुसार पक्षी और मनुष्य सहित अनेक स्तनधारी शिशु पक्षियों और स्तनधारी वयस्क की तुलना में तीन गुना अधिक नींद लेते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि इस अवधि में सन्याओं के पारस्परिक बंधनों में परिवर्तन होता है। इससे पहले हुए अध्ययनों से यह बात सामने आ चुकी है कि नींद का मनुष्य के सीखने की क्षमता और याददाश्त पर सीधा प्रभाव पड़ता है। शोधों से यह भी तथ्य पता चला है कि नींद से वंचित होने पर मनुष्य की स्मरणशक्ति पर विपरीत असर पड़ता है। स्पष्ट है कि शयन समस्त प्राणियों के लिए उतनी ही आवश्यक शारीरिक और मानसिक क्रिया है जितनी कि दैनिक कार्यों के लिए जागरण (जागना)। यह बच्चों, युवाओं और वयस्कों द्वारा स्वस्थ ढ़ंग से अपने कार्यों के निष्पादन हेतु अनिवार्य है।

हस्त–स्पर्श चिकित्सा

शम्भू नाथ मिश्रा

शरीर के किसी भी अंग में पीड़ा या विकार हो तो आप मानसिक पवित्रता और एकाग्रता के साथ निम्नलिखित वेद मंत्र का मन में पाठ करते हुए दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़कर गर्म कर करके उनसे पीड़ित अंग का पॉच मिनट बार–बार सेंक कीजिए और सेंक करने के पश्चात नेत्र बन्द करके कुछ मिनट तक सो जाइए। आप अनुभव करेंगे कि आपके पीड़ित अंग की पीड़ा में आश्चर्यजनक रुप से कमी आई है। इससे गठिया, सिरदर्द तथा अन्य सब प्रकार के दर्द दूर होते है। मन्त्र इस प्रकार है–

अयं में हस्तों भगवा, नयं में भगवात्तरः।
अयं में विश्वमेंवजो, यं शिवामिमर्शनः।

अर्थात, मेरी प्रत्येक हथेली भगवान (ऐश्वर्यवाली) है, अच्छा असर करने वाली है, अधिकाधिक ऐश्वर्यवाली और अत्यन्त वरकत वाली है, मेरे हाथ में विश्व के सभी रोगों की समस्त औषधियॉ है, और मेरे हाथ का स्पर्श कल्याणकारी, सर्वरोग निवारक और सर्वसौन्दर्य सम्पादक है।

आपकी अन्तः करण की पवित्रता तथा मानसिक एकाग्रता जितनी अधिक होगी उसी अनुपात में आप इस मन्त्र द्वारा हस्त चिकित्सा में सफल सिद्ध होते चले जायेगें। अन्तःकरण (बुद्धि, मेधा, मन और चित्त) की पवित्रता का शारीरिक स्वास्थ्य तथा, सौन्दर्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अपनी हथेलियों के इस प्रकार एकाग्र और पवित्र प्रयोग से आप न केवल अपने अपितु अन्य किसी के भी रोग को दूर कर सकते है।

(वैदिक पुस्तक के संस्कमरण से.)

पसंदीदा रंग बताएगा इनसान का चरित्र

इनसान के चरित्र का रंगो से गहरा संबंध है। ऐसा कहना है मनोविज्ञानी डॉक्टर पॉल गोल्डीन का। इसे साबित करने के लिए गोल्डीन ने एक बेबसाइट कलरजेनिक्स डॉट कॉम बनाई है। इसमें आठ रंग है। लोगों को अपने पसंदीदा रंगों को क्रमवार व्यवस्थित करना होता है। डॉक्टर पॉल का कहना है कि रंगो को सजाने भर से ही लोगों के चरित्र का विश्लेषण किया जा सकता है। फिलहाल इन रंगो के जरिए डॉक्टर पॉल माइग्रेन के रोगियों पर शोध कर रहे है।

स्वस्थ दिल के जरुरी है फॉलिक एसिड

आज की व्यस्त जिंदगी में ज्यादातर लोग तनाव में रहते है, जिसके कारण वे दिल की बीमारियों से पीड़ित हो जाते है। फास्ट फूड खाने से भी दिल तक खून ले जाने वाली धमनियों में वसा जमा हो जाती है, जिससे हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। लेकिन हाल ही में चीन, ब्रिट्रेन और ऑस्ट्रेलिया के विज्ञानियों ने एक महत्वपूर्ण शोध के बाद बताया है कि फॉलिक एसिड की कमी से होमोसिस्टीन नामक अमिनो ऐसिड की मात्रा बढ़ने लगती है, जिससे धमनियां पतली हो जाती है। धमनियों के सिकुड़ने से हार्ट अटैक की आंशका बनी रहती है। विज्ञानियों ने शोध के दौरान पाया कि जिन लोगों ने लगातार एक साल तक फॉलिक ऐसिड लिया, उनके शरीर में होमोसिस्टीन की मात्रा घट जाने से धमनियां पूरी तरह स्वस्थ बनी रहीं। इसके लिए विज्ञानियों ने 30 ऐसे लोगों पर शोध किया, जिनमें होमोसिस्टीन की मात्रा बढ़ी हुई थी।

बच्चे के सोने के लिए जरुरी है रोना

ऑस्ट्रेलियन विज्ञानियों ने एक अध्ययन के बाद बताया है कि बच्चों का रोना बहुत जरुरी है। मेलबर्थ स्थित रॉयल चिल्ड्रन हॉस्पिटल के शोधकर्ताओं का कहना है कि रात रोते हुए बच्चे को चुप नहीं कराना चाहिए। उसे तब

खोज खबर

तक रोने देना चाहिए, जब तक कि वह खुद–ब–खुद थक कर सो न जाए। इसके लिए शोधकर्ताओं ने 150 ऐसी माताओं पर अध्ययन किया, जिनके छह से लेकर बारह महीने तक के बच्चे थे। ये सभी बच्चे नींद नहीं आने से परेशान रहते थे। ये सप्ताह में पांच रात तक जगे रहते थे या रात मे तीन ज्यादा बार जाग जाते थे।

महिलाओं के लिए आभूषण जीतो प्रतियोगिता नं० १

स्नेह आपके लिए लाया है बेसुमार किमती उपहार,

सोना और चॉदी

प्रथम पुरस्कार– सोने की चेन
द्वितीय पुरस्कार– सोने की अंगुठी
तृतीय पुरस्कार– चॉदी के पायल
चतुर्थ पुरस्कार–चॉदी की अंगुठी

यहां पर 10 सवाल हैं। उनके सामनें खली जगहों में उनके उत्तर को लिखकर हमें भेजें। सही उत्तर भेजने वालों को मिलेगें ढेरों ईनाम। प्रश्न के अंत में एक विशेष प्रश्न है। विशेष प्रश्न के सबसे अच्छे उत्तर को मिलेगें आभुषणों के अतिरिक्त एक स्नेह प्रमाण पत्र।

हमें इस चौकोर कागज को काटकर साधारण डाक से भेंजे।

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री ....
2. उत्तर प्रदेश की प्रथम तीन महिला मुख्यमंत्री ....
3. उड़नपरी नाम से जानी जाने वाली महिला ....
4. भारत कोकिला नाम से पुकारी जाने वाली महिला ....
5. प्रथम विदेशी महिला सांसद ....
6. इलाहाबाद की प्रथम महिला विधायक ....
7. डाकू से सांसद बनी महिला ....
8. प्रथम महिला राज्यपाल ....
9. प्रथम महिला आई.पी.एस. ....
10. फिल्म क्रांति पुरानी की नायिका ....

विशेष प्रश्न – स्त्रियों का सबसे बड़ा आभूषण क्या है?

भेजने वाले का नाम : ....
आयु : ....
व्यवसाय : ....
पता : ....
....

15 वर्ष से कम उम्र की लड़किया इसमें भाग नहीं ले सकती। विजेताओं के ईनाम डाक द्वारा या हाथों–हाथ वितरित होंगे।

प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथिः 25 जून 2002

कूपन भेजने का पता : आभूषण जीतों प्रतियोगिता न01
मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज, नितीन काम्पलेक्स,
मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद–8

आपकी जुबान

इस बार पत्रिका में बहुत सुधार हुआ है

सेवा में,
संपादिका महोदया

अंक 7, मई 2002 के अंक को पढ़कर ऐसा लगा मानों इस पत्रिका के दिन आने वाले है। अब तक यह पत्रिका बस नाम की पत्रिका लगती थी, किंतु इस अंक में काबिले तारिफ सुधार हुआ है। बस अब एक कमी है वह कवर को रंगीन कर दे तो बस मजा ही आ जाए। मैंटर के लिहाज से यह बहुआयामी पत्रिका साबित हो रही है। कवर रंगीन होने के बाद इस पत्रिका का स्थान बहुत जल्द लोंगों के दिल में बैठ जाएगा। इसके पत्रिका परिवार धन्यबाद का पात्र है।

प्रीति सिंह, इलाहाबाद, रोमी जूलियट, वाराणसी, जी. पी. सिंह, फतेहपुर, आदि।

भगवान ऋषभ `देव अहिसा एवं विश्व शांति के प्रथम उपदेष्टा

सेवा में

सपांदक महोदय

आपने जैन धर्म के तीर्थ स्थल के बारे में जानकारी प्रकाशित कर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। ऐसे तीर्थस्थलों की जो वास्तव में प्राचीन है या जो अपने में इतिहास को समेटे हुए हैं। प्रकाशित करना एक सराहनीय प्रयास है।

हमें उम्मीद है कि आप लोग आगे भी इस तरह के लेखों को प्रकाशित कर ते रहेंगे।

पंकज जैन,रीना पाण्डेय श्रीमती पारुल सिंह,

मुर्ख दिवस पर प्रकाशित सामग्री काफी अच्छी लगी।

महोदय,

मई अंक में प्रकाशित मुर्ख दिवस से सम्बंधित कविताएं और राही अलबेला का लेख पति एक दयनीय और पालतू प्राणी होता है। बहुत ही अच्छा लगा।

पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाएँ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी "नैना" का उपन्यास दिल का पैगाम भी अच्छी लगीं।

राजेश तिवारी, राधा सिंह, शालिनी मिश्रा, पिकी तिवारी आदि, लखनऊ

विश्व स्नेह समाज युवाओं के भावों का करता है श्रृंगार

यह अंक बहुत ही सुरुचिपूर्ण तार्किक एवं अनुभवशील प्रतीत हुआ, सभी प्रयास बहुत ही हृदयस्पर्शी एवं प्रशंसनीय है।

विश्व स्नेह समाज को समर्पित एक कविता
:विश्व स्नेह समाज युवाओं के भावों का,
करता है अनुपम श्रृंगार।
मनमोहक आलेखों द्वारा
संचित करता ज्ञान
सामाजिक दर्पण बन करके,
सत्य को प्रस्तुत करता
नयी सदी के नये उमंगो
के संग दे नूतन संदेश
अतिशय हो बेजोड़ पत्रिका
मिले प्रसिद्धि, देश विदेश।।

अंत में पत्रिका परिवार को अतीत की मधुर स्मृतियों, वर्तमान की सुख उमंगो और भविष्य की उज्जवल आशाओं के साथ।

ईश्वर शरण शुक्ल
पुत्र श्री संजय शर्मा,
चकदाउद नगर, नैनी, इलाहाबाद

समय पर मासिक पत्रिका

"विश्व स्नेह समाज"

आपके दरवाजे पर। इस सुविधा का लाभ उठाइये और अपनी चहेती पत्रिका को घर बैठे पाइये। न खरीदने जाने की जरुरत न अंक खत्म होने का डर। बस नीचे दिये गए कूपन को भरकर हमें शुल्क सहित भेज दीजिए। आपको हमारे प्रतिनीधि द्वारा एक रसीद मिलेगी जिसको संभाल कर रखिए आपके सदस्य संख्या पर ड्रॉ निकाला जायेगा। जिसकी सूचना आपकों डाक द्वारा भेजी जाएगी। जनता की मांग पर हम अपनी आखिरी तारिख 15 अगस्त 2002है। इसका ड्रॉ हम अपने वार्षिक समारोह सितम्बर में करेगे।देर मत कीजिए

खुला ऑफर खुला ऑफर खुला ऑफर

पत्रिका के सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रुपये के ईनाम

भारत में:मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00

मूल्य वार्षिक : (रजि0 डाक) रु0 100/00

विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150/00

आजीवन सदस्य : रु0 1100/00

भुगतान का माध्यम चेक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20/00 अतिरिक्त राशि देय होगी। कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

प्रधान संपादक
मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"**
नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद–8

भेजने वाले का नाम :............................
....
डाक का पता : ....
....

(स्नेह परदे की शोभा)

सुधार गई है करीना

आमतौर पर करीना कपूर को बॉलीवूड में असंयमित व्यवहार करने वाली हीरोइन माना जाता है। लेकिन इधर उनका एक अलग संजीदगी भरा स्वरुप देखने में आया है, ऐसे में तो लोगों का चकित होना स्वाभाविक ही है। पिछले दिनों उनकी एक फिल्म की शूटिंग के दौरानल ग्रेसी सिंह की उस बात की चर्चा निकल पड़ी, जिसमें ग्रेसी ने कम कपड़े पहनने वाली हीरोईनों के लिए अपना एतराज जताया था। करीना के चारों ओर बैठे गप्पे मारने वालो ने ग्रेसी की इसी बात से करीना को भी भड़काया कि यह बात तो आप पर भी लागू होती है। आपके किम शर्मा की तरह ग्रेसी को पलटकर जवाब देना चाहिए। लेकिन यह क्या, करीना तो मानो साध्वी हो गई हों। उन्होनें ग्रेसीं वाली बात से अनजान बनते हुए सिर्फ यही कहा, ' मैं इतना जानती हूँ कि उसने 'लगान' में जबरदस्त अभिनय किया है, शायद मैं भी वैसा अभिनय न कर पाती।' करीना का यह जवाब सुनकर लोगों को झटका लगा और सबकी बोलती बंद हो गई।

देवेन्द्रपुरम् आवास योजना

इन्दलपुर रोड, नैनी, इलाहाबाद

पूर्ण विकसित (डांमर रोड, नाली, पानी, लाईट, बाउन्ड्रीवाल) एवं फ्री होल्ड प्लाट, आकर्षक मूल्य पर उपलब्ध है।

पहले आओं पहले पाओ

नोटःरेलवे स्टेशन से 200 मी0 की दूरी तथा नये पुल के रास्ते के नजदीक स्थित है।

सम्पर्क करें : जी0 के0 द्विवेदी, एफ.सी.एल.सी. कम्प्यूटर सेन्टर, नितिन काम्पलेक्स, मेवालाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद

ख्वाब न रह जाए

रैंप की दुनिया का मशहूर नाम मधु सप्रे का बचपन से ख्वाब थ कि वह फिल्मों में हीरोइन बने। इस ख्वाइश को पूरा करने के लिए निर्माता–निर्देशक केजद गुस्ताद ने फिल्म 'बूम' में उसे हीरोइन के रुप में साइन कर लिया।

शूटिंग शुरु होने पर जब डायलॉग बोलने की बारी आई, तो मध ु को न जाने क्या हो गया। 20 रीटेक के बाद भी जब शॅाट ओके नहीं हुआ, तो केजद के सब्र का बांध ा टूट गया। हारकर उन्होनें मधु का डॉयलाग काटकर एक लाइन का कर दिया।

इससे मधु भी भड़क उठी। बात संभालने के लिए निर्माता आयशा श्रॉफ को बीच में आना पड़ा। अब केजद ने गुस्से पर काबू पाते हुए मध ु को एक ओर मौका देने की हामी भर दी। पर लाख टके का सवाल यह है कि जब मधु को ऐक्टिंग आती ही नहीं, तो बाद में ही कौन–सा तीर मारं लेगी।

गुप्त रोग
निराश क्यों?

यदि आप किसी भी तरह के गुप्त रोग से परेशान है। ढ़लती हुई उम्र हो या बचपन की गलतियों के कारण अपने अन्दर मर्दाना कमजोरी, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, धातुरोग, कमर दर्द, पेशाब में जलन, सुस्ती आदि रोग महसूस करते हो और जगह–जगह इलाज करवाकर निराश हो चुके हों तो आज ही **न्यू हेल्थ क्लीनिक** के विशेषज्ञ डाक्टर से मिलकर अपने वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

100: सुरक्षित यूनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा, सस्ता, सरल एवं सफल इलाज के लिए आज ही सम्पर्क करें।

नोट : ध्यान रहे सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है। गारण्टी नहीं, बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

परामर्श शुल्क 50/–रुपये दवा खर्च रोग के अनुसार

सन् 1962 से लगातार जनता की सेवा में कार्यरत है।

समय : प्रातः 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक,
रविवार : प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल (झॉ बिल्डिंग के सामने),
घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

एड्स एक जानलेवा रोग है, इससे बचिए।

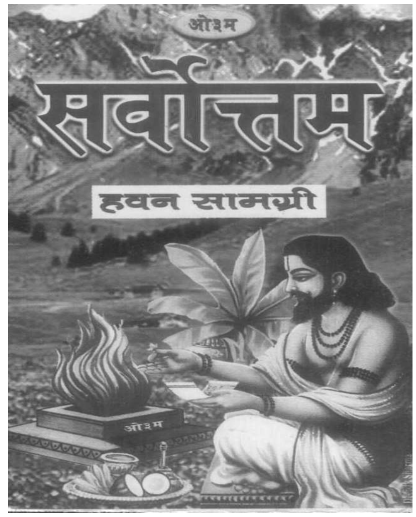

सुन्दर लाल आर्य

नोट : एजेन्सी हेतु सम्पर्क करें। फोन0 न0 404954

निर्माता : **आर्य पूजा भण्डार**
आर्य समाज चौक, इलाहाबाद
पं0 सं0 020/03/220

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स

53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016
हमारें यहॉ सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स

नोटः विज्ञापन बोर्ड नए बनते है तथा रिपेयरिंग होती है।

प्रो0 हरिशंकर शर्मा

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए समर कोर्स प्रारम्भ है।

इग्नू द्वारा संचालित :
एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,
डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल
माखन लाल चर्तुवेदी रा0 प0विश्वविद्यालय द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करेः कौशाम्बी रोड, धुस्सा, ग्राम प्रधान की मकान,इला0

बम्पर आयोजन

पत्रिका के एक वर्ष पूरे होने पर हम सितम्बर माह में एक विशेष विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे है। जिसके उपलक्ष्य में एक भव्य संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा साथ ही पूरे **इलाहाबाद में 100000 प्रतियों** तथा बाहर के जिलों में (गोरखपुर, बनारस, लखनउ, कानपुर, रायबरेली, फतेहपुर, प्रतापगढ़) में हजारों प्रतिया निशुल्क वितरित की जायेगी। अतः आप सबसे अनुरोध है आप अपने विज्ञापन, संदेश के लिए तथा संगीतमय कार्यक्रम (डांस, अतांकक्षरी, काव्यगोष्ठी, सोला सांग) हेतु अपना फार्म भर कर अभी से जमा कर अपना स्थान सुरक्षित करा लें। यह कार्यक्रम अपनी तरह का अद्वितीय कार्यक्रम होगा। देर ने करें। मौका हाथ से निकल जायेगा। नहीं तो बाद 'अब पछतायें का होत है जब चिड़िया चुंग गई खेत'

समय किसी का इंतजार नहीं करता।

हमारा अगला अंक शिक्षा पर आधारित होगां। जिसमें आप शिक्षा कहॉ ले, किन स्कूलों में ले, शिक्षा में गिरावट का कारण क्या है?

साथ ही : **ललिता शास्त्री ने विदेशी चुड़िया तोड़ी**, युवा उपान्यासकार गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी **'नैना'** का धारावाहिक उपन्यास **'दिल का पैगाम'**, ज्योतिष, कम्प्यूटर, कैरियर, महिलाओं के कानुनी अधिकार **'महिला को वसीयत करने का अधिकार'**इत्यादि ढेर सारी रोचक व मजेदार स्तम्भ। जानने के लिए पढे। अपनी विज्ञापन अभी से बुक करवा ले। नहीं तो सुनहरा मौका हाथ से निकल जायेगा।

अगले अंक में पढ़ना न भूलिए, अपनी प्रति अभी से बुक करा ले।

विश्व स्नेह समाज

मासिक पत्रिका

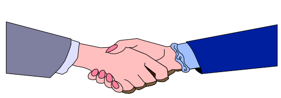

सम्पादकीय कार्यालयः
,एफ0सी0एल0सी,नितिन काम्पलेक्स,
मेवालाल की बगिया,, नैनी, इलाहाबाद–8

शाखा कार्यालयः
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद
☎ 432953